मदनमंजरी नाटक।

जिस को।

श्री मान गोंठिया अमानसिंह साहिब ता-
लुकेदार परगनः गढ़ा ज़िला जबलपुर
व पण्डित जगेश्वरदयाल हेड मास्टर
टौन स्कूल गढ़ा ने श्री बाबू हरि-
श्चन्द्र भारतेन्दु की अनुमति
से बनाया।

BENARES.

Bharat-jiwan Press.

1884.

मदनमंजरी ।

—ooo—
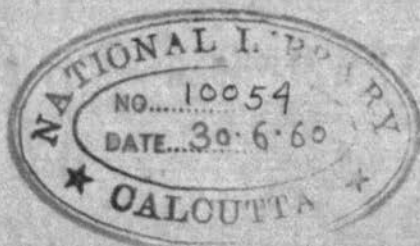
श्रीगणेशायनमः ॥

भूमिका ।

विघन हरण गण राय मूषक बाहन गज बदन ।
गनपत चरण मनाय तबै काज कछु कीजिए ॥

दोहा ।

सिद्धि सदन सुन्दर बदन नद नन्दन मुद मूल ।
रसिक सिरोमणि सांवरे सदा रहहु अनुकूल ॥

श्री सर्व गुणाकार जगदीश्वर सर्व शक्तिमान ज्योतिस्वरूप अकथ अनाद को बारम्बार साष्टाङ्ग दंडवत करता हूं कि जिस्की माया संसार में विदित है और जड़ वा चैतन्य में वर्तमान है और सबको एक दृष्टि से अवलोकन करती है, हे दीनानाथ ! हे पतित पावन ! हे त्रिलोकी नाथ ! हे विश्वम्भर ! हे नाथ ! ऐसा कौन है जो तुम्हारी कीर्त और स्तुति वर्णन करने सके शेष जी सहस्र जिह्वा से लीला आप की वर्णन करती हैं परन्तु पार नहीं पाती, हे जगत पती !

तुम संसार के स्वामी हो हे नाथ! तुम्हारी महिमा वो बड़ाई कोई कीर्तन नहीं करसक्ता है, हे ईश्वर! तेरी शक्ति से आकाश रूपी तम्बू वे खम्भा खड़ा है, हे नाथ! तुम्ह में इतनी सामर्थ है कि—

सवैया।

चाहै सुमेर को क्षार करै अरु क्षार को चाहै सुमेर बनावै॥ चाहै तो रंक से राउ करै चाहै राव कोद्वारहि द्वार फिरावै॥ रीति यही करुना-निधि की कबि देव कहैं बिनती मोहि भावै॥ चीटी के पांव में बांध गयन्दह चाहै समुद्र के पार लगावै॥ १॥

सो हे नाथ! तुम्हारी महिमा वा बड़ाई इस दास मति मन्द से कहां हो सक्ती है॥

मैंतो—

आलस नींद में मातो सदा अरु उद्यमहीन टुबैर खवैया॥ प्यास लगी नहीं पानि पियों अरु पास धरी उठके न पिवैया॥ ऐसे निकम्म को ही सुखदेव कृपा के धाम हो पेट भरैया॥ भोर ते

सांझ अरु सांझ सी भोर लौं मो सौं कपूत न तो सौं दिवैया ॥ २ ॥

अब मैं श्री जगत माता श्री राधा महारानी के चरन कमल की वन्दना करता हूं और अनेक प्रकार की साष्टांग दंडवत करता हूं ॥

॥ कवित्त ॥

एकही झमाके में झमासे दृग मोहन के ऐसी मार मांके न रमा के न उमा के हैं ॥ दसहूं दिसा के मनसा के फल देन हार करन निसाके अब साके बार वाके हैं ॥ जहां जाय झांके मीन मन मद ठाके एरी नीके हैं अदाके ऐसे कमल कहां के हैं ॥ सघन समाके उपमा के महिमा के चारु चंचल चमाके नैन बांके राधिका के हैं ॥ १ ॥

खंजन मृगा के मधुपाके मीन झांके एन जाके दिश ताके परें डांके में उड़ाके हैं ॥ घूमे मद छाके छैला के प्रीत पाके शीलता के चा-

रुता की चऊरता की ये कजा की हैं॥ कारे क-
जरारे हैं मजा की उपमा के हीन रामदास का
की हियरा के नहरा की हैं ॥ ठोंकि घुंघुटाके र-
हे ताके न कजाके बड़े चंचल चमाके नैन वां
के राधिका के हैं ॥ २ ॥

विनय

हे प्रिय पाठक गण !!!

जो जन याको पढ़ै विनय इतनी सुनि लीजे ॥
भूल चूक जो होय चित्त में एक न दीजे २ ॥

यद्यपि इस दास की बुद्धि बहुत अल्प और मति मन्द है परन्तु बड़े पुरुषों की देखा देखी करना चाहता है वह क्या है कि मनमें उत्पन्न हुआ कि एक पुस्तक "मदनमंजरी" नाटक बनावें परन्तु कहां हो सक्ता है कि तय्यार होजावे बरन ईश्वर कृपा करे तो सब कुछ हो सक्ता है और आप लोग दया करें सो हे प्रिय पाठक गण आप लोग दया से इस दास पर कृपा करके इस पुस्तक को पढ़ कर इस मति मन्द के श्रम को सुफल कीजिये तो अत्यन्त कृपा हो ॥

हे प्रिय पाठक गण !

दोहा ।

जन्म सनावढ वंश में सब से महा अधीन ॥
क्रूर कुटिल खल जान के गुरु अपना कर लीन ॥

हे प्यारे पाठक यह दास ग्राम गढ़ा जबलपूर के अति निकट सनावढ बंश में सम्वत् १९१७ साल में जन्मा और पांच बर्ष की अवस्था में पिता जी जो इस जिले के मुख्य रईसों में से थे और सरकार से भी उहदा पाए हुए थे स्वर्ग लोक को सिधारे तब हमारे मातृ गण मामा बलदेव प्रसाद जोसी ने रियासद का प्रबन्ध किया फिर हमारी खैर खाह सरकार ने कोरट का प्रबन्ध करके दास पर बड़ी ही कृपा की और श्री काशी जी को विद्या उपार्जन के हेतु भेजा वहां छ बर्ष रह कर इङ्गलण्डीय भाषा औ अपनी देश भाषा औ जामनी भाषा पढ़कर सन् १८८० में लौटा तब फिर रियासत सरकार ने और बहुतसा माल दास को कृपा किया जब काशी में था तब श्रीयुत बाबू हरिश्चन्द भारतेन्दु की बनाई हुई बहुत सी पुस्तकें देखी तो मन से उत्पन्न हुआ कि मैं भी बाबू साहब की सहायता से इस पुस्तक को प्रचलित करूं सो लटा मोटा बनाकर आप की शरण में भेजता हूं यदि कुछ भूल हो क्षमा कीजिए ॥

इस नाटक के बनाने में हमारे बाबू हरिश्चन्द्र भारतेन्दु ने बड़ाही श्रम किया कि इस को शुद्ध करके प्रचलित करा दिया उनको नमस्कार है ॥

दूसरे—हमारे परम मित्र पण्डित जागेश्वर दयाल तिवारी हेड मास्टर टौन स्कूल गढ़ा ने अतिही दया करके दास को इसके बनाने में अत्यन्त मदद दी मै उनकी कृपा कहां तक लिखूं ॥

तीसरे—हमारे इसी ग्राम के एक रईस माफीदार सय्यद अकबर अली ने भी कहीं कहीं कृपा दृष्टि से नाटक के बनाने में अत्यन्त श्रम किया मैं उनका भी सच्चे मन से धन्यवाद करता हूं ॥

हे प्रिय पाठक गण—इस मति मन्द ने बुद्धि अल्प के कारण एक सभा नियत कर ली है उसी सभा की अनुमति से सर्व काम होता है उस सभामें निम्न लिखित महाशय हैं

नम्बर	नाम	जात
१	बाबूदेवीप्रसाद चौबे ।	ब्राह्मण ।
२	बाबू छुटकूलाल ।	ब्राह्मण ।
३	पण्डितलक्ष्मी प्रसाद शुक्ल ॥	ब्राह्मण ।
४	मुनशी कादर अली ।	यवन ।
५	पंण्डित जागेश्वर दयाल ।	ब्राह्मण ।

१ यह महाशय बड़े रईस हैं बहुत उत्तम कुल के हैं ॥

२ यह महाशय इस दास के निज बहनोई हैं ॥

३. यह महाशय इस दास के फुफेरे भाई हैं अत्यन्त श्री-
मान हैं ।

४ यह महाशय पांच गांव के माफी दार हैं ।

५ यह महाशय हेड मास्टर स्कूल के हैं और कवि हैं ।

आप का दास
अमान सिंह गोटिया गढ़ा
जिला जबलपूर सी० पी०
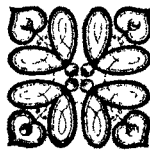
समर्पण ।

मित्र !!!

लीजिये आज बसन्त पंचमी है लोग मंजरी शिव को चढ़ाते हैं और मैं यह नवीन मंजरी आप के समर्पण करता हूं पर देखिये यह नव पल्लव सहित है और मन रूपी धूप बहुत कठिन है इसे अच्छी तरह अङ्गीकार कीजिए कहीं कुह्मिला न जाय ॥

आप का शुभ चिन्तक

अमान सिंह गोटिया

पुरुष ।

मदनमोहन सूत्रधार ।	राजकुमार ।
मित्रसिंह ।	राजा का मित्र ।
कोहमर्दन ।	रानी मंजरी का पिता ।
कालिकाप्रसाद ।	राजा का मुंशी ।
मंत्री ।	मंत्री ।

स्त्री ।

मंजरी ।	रानी कुमारी ।
चपला ।	सहेली ।
मोहनी ।	सहेली ।
दामिनी ।	सहेली ।
रानी बसंतकुमारी ।	राज कुमारी की माता ।

श्रीगणेशायनमः ।

मङ्गला चरण ।

श्लोक ।

तीव्रैस्तिग्मरुचेः करैःपरिचितां सेतुं कपोलस्थलीं नीराणांनिकरं करेण हरता तुच्छी कृते वारिधौ ॥ मैनाकं समुदीक्ष्य पंकपतितं शम्बूकशंकाजुषो हेरम्बस्यपुनातुदन्तशिखरव्यापार लीलारसः ॥ १ ॥

वन्दे जगन्नाटक सूत्रधारं श्री जानकी नायकमप्रमेयं, शेषाग्रजं दर्शितिलोकरीतिं गुरुं हनूमन्तमतुल्यभक्तिं । तन्वन्तुभद्रं भवतां विभूतयो भवाटवी संभ्रमतां हरेस्ताः । प्रियानुजाभ्यां सह योगिनोवा वियोगिनो दंडक काननेरणे ॥

नटीवायसना रंगे पात्रैर्नवनवैरसैः । नृत्यताद्राम लीलायां प्रतिसीराकृते कविः ॥

(सूत्रधार इस मंगल को पढ़ता हुआ आता है और नटी उसकी स्त्री पीछे आती है)

नटी—अहा आज का दिन अतिही उत्तम है (इधर उधर देख कर) वाहवा आज इतने महाशय एकत्र हैं तो आज कौन नाटक खेलूं (सोच कर) आर्य ! आज क्या मदन मंजरी करोगे ?

सूत्रधार—प्रिये ! अच्छा सोचा, खेल के विषय में स्त्रियों की बुद्धि पुरुषों की बुद्धि से अधिक होतीहै देखो प्रिये वह नाटक अभी बन कर प्रचलित हुआ है ॥

नटी—आर्य उस नाटक को किस ने प्रचलित किया है ?

सूत्रधार—हे प्रिय, वह अपूर्व नाटक श्रीमान गोटिया अमानसिंह तालुकेदार को जो जबलपूर के अति निकट ग्राम गढ़ा में रहते हैं औ पंडित नागेश्वर दयाल तिवारी हेड मास्टर टौन स्कूल गढ़ा वा बाबू हरिश्चन्द्र भारतेन्दु की अनुमति से शुद्ध करा कर विदित किया गया है ॥

नटी—बहुत अच्छा वही नाटक नवीन है और आज पर्य्यन्त नहीं खेला गया उसको अवलोकन कर हमारे प्रिय महाशय गण अति उत्कंठित होंगे ॥

प्रथम अंक

जवनिका उठती है ॥

(मंजरी, मोहनी चपला और दामिनी का प्रवेश)

मंजरी—हे सखी आज का दिन कैसा शोभायमान है कि सूर्य्य नारायण षोडष कला से प्रकाश कर रहे हैं ॥

मोहिनी—हे स्वामनी यह ऋतुराज है और यह सर्व ऋतुओं का अधीश है अब देखो आज बसन्त पञ्चमी है, आम बौरने लगे ॥

दामिनी—हे सखी ठीक है यह ऋतु बिरही स्त्रियों को बहुत दुखदाई है कोयल का कुहुकना तो मानो हिय को बेधे डालता है और सर्व दिशाओं के अवलोकन करने से प्रख्यात होता है कि ऋतुराज का आगम है ॥

कवित्त ।

डारेहैं तमाल पत्र पांवड़े अवाई सुन गावत हैं गुनी जन इत उत छाह के । फूल उठे कुन्द ये मलिन्द बेग धाय उठे कूक उठी कोकिला कलापी चित्त चाह के । प्यारे आम मोर उठे

पक्षी गण दौर उठे चांदनी चंदेवा जन लागे नर नाह के । गिलमें गुलाबन की गद्दी चारु चम्पे की बागन बीच डेरे हैं बसन्त बादशाह कि ॥

चपला।—हे प्रिय एक कवित्त मैं भी कहती हूं कदाचित तू कुपित न हो ?

मोहिनी—नहीं प्यारी मैं कैसे तुझसे कुपित हूंगी, पर कहीं हमारी प्यारी मंजरी कुपित न हो ॥

मंजरी—हे सखी तूं कहे जा क्यों मुझे तूं डाहती है ॥

चपला—हे प्रिये कहती हूं (कवित्त कहती है)

आई है बहार बन बेलिन नवेलिन में बहुधा चमेलिन में भौर भीर छाई है । छाई है छपाकर की मरीचका दरीचन में तिनहूं लखत न को अतन ताप ताई है । ताई है सकल सुध बुध जसवन्त मेरी जबते प्राण प्यारे प्रान प्यारी बिसराई है । राई है न नेक कहूं नवमें कलेवर मे कहियो हो कान्त सो बसन्त ऋतु आई है ॥

तालन पे ताल पे तमालन पे मालन पे

लाल माल बाल पे रसाल सरसो परें । पढ़ै
कवि रामचन्द्र कुन्द कन्द बन्दन पै चन्दन पै
चन्द पै मलिन्द दरसो परें । केकी केल केसर
करंज केतकी पै कंज कार कूल कोकिल कदंब
परसो परें । रंग रंग रागन पै संगही परागन पै
वृन्द बन बागन पै बसन्त बरसो परें ॥ २ ॥

सुमन समुद्र हूते सीस मोर फन्द हूते चारु
मुख चन्द ते अनन्द दरसो परे । पीत पट ब-
सन हूते कुन्द से दसन हूते मन्द बिहसन हूते
रस सरसो परे । मन्द रवितान हूते बंशी सुर
गान हूते मैंन पैन वान ते पराग परसो परे ।
भूषण बिलास हूते लाल गुञ्ज माल हूते और
बन माल ते बसन्त बरसो परे ॥ ३ ॥

मंजरी—(मनमें) हाय दई मैं तो बे मारी मरी कि देखो यह ऋतु राज है मनोज उद्भव होने का समय है पर क्या करूं (प्रगट) हे सखी मुझे मत दुख दे मैं तो आप ही आप मर रही हूं परन्तु तूं और प्रज्वलित अनल में घृत डालती है ॥

मोहनी— हे सखी, मैं क्या कुछ कहती हूं .तू तो आप ही आप—

चपला—हे प्रिय देखो मंजरी का कलेवर पीत वर्ण की अवस्था को प्रति दिन प्राप्त होता जाता है कि इसको देखो दई मारा मैन सदैव बेचैन करता है दिन प्रति दिन यौवन की अधिकता होती है पर न जाने यह क्यों मन की मलीनता में प्रविष्ट रहती है ॥

मोहिनी—अच्छा देखो तो मञ्जरी प्यारी वह अकेली पुष्पवाटिका में क्या अवलोकन कर रही है ?

चपला—सखी देखूं तो सही (देखती है) अरी वह देखो

कवित्त

कम्ब सहेलिन के भुज मेलत खेलत खेल खरी एक जाम की। अङ्गन अङ्कित भूषन भूषित जात कही न प्रभा वर बाम की। तौ लग कुञ्ज से नन्द किशोर बिलोक बढ़ी दशा आतुर काम की। सुन्दरी रूप की मंजरी बाल सुमंजरी देखत मंजरी आम की ॥ १ ॥

मोहिनी—तो चलो वहीं चलें जहां वह खड़ी है ॥

(जाती है)

(स्थान पुष्प वाटिका)

मोहनी दो सहेली सहित खड़ी है ॥

मोहिनी—हे प्यारी मञ्जरी, तेरा चित्त उदास होने से मुझे बड़ा सन्देह उत्पन्न होता है और तू अपने मन की बात हम से छिपाती है हम तो तुम्हारी दासी हैं हम से तू अपना हृदय का गुप्त समाचार मत छिपा ॥

मञ्जरी—नहीं सखी तू तो मेरी परम प्रिय सहेली है मैं तुझ से क्यों गुप्त रक्खूंगी परन्तु हे सखी लज्जा के कारन कुछ नहीं कह सकी ॥

मोहिनी—मैं तुझे अपनी सौंह देती हूं तू प्रगट कर ॥

(प्रतिहारी का प्रवेश)

प्रतिहारी—हे राज कुमारी मालिन आप के निमित्त पुष्प लाई है क्या आज्ञा है ?

मञ्जरी—आने दो

(पीत पुष्प लेकर मालिन का प्रवेश)

मञ्जरी—(मन में) देखो जो पुष्प मेरे विरहानल को बढ़ाने वाले हैं सोई फूल सौत मालिन ले आई है ॥ (प्रगट) अरी मालिन यह पुष्प मेरे लिए दुख दाई

है तूं क्यों लाई ? सो अरी मालिन तू इन पीत पुष्पों को मेरे नैनों के आगे से हटा ॥

(जाती है

कवित्त

पीरी तन सारी सीस परते उतार डारी जब ते बसन्त ने आगम जनाई है। पीरो आभूषन तन पीर करन लागो सखी बिना पीव प्यारे पियराई उर छाई है। ऋतु की पियराई सभा इन्द्र मन भाई हमको पियराई दुख दाई हो आई है। जोई पियराई तन हूक होत मेरी आली सोई पीरे फूल सौत मालिन बीन लाई है ॥ १ ॥

मोहिनी—हे सखी अब तो कह ?

मञ्जरी—हे प्यारी क्या कहूं मैं एक दिन बर्षा ऋतु में अपने महल की अटा पर चढी घटा देख रही थी कि

कवित्त

अम्बर अटान फैल फूटत फटान अनु धावत नटान छबि छाजत छटान की । चातक

रटान जल जंगम बटान बुन्द चुवत लतान मन्द मारुत कटान की। भीजे दुपटान नदी नद उपटान पौषतान लपिटान मैंन मदन सटान की। बाग के तटान ओढ़े कुसुम पटान ठाढ़ी देखत अटान चढ़ी लहरें घटान की १॥ बादल पटान कारे सटित सटान जनु धावत नटान ज्यों बिज्जु सटकान की। अम्बर भुमटान ज्यों लपटत सुभटान देव बिजय निशान बुन्द उदित कटान की। भनै जगेश्वर ऋतु पावस भट जानियों चातक रटान कूक कोयल हटान की। नद के तटान ओढ़े कुसुम पटान ठाढ़ी देखत अटान चढ़ी लहरें घटान की २॥

हे सखी उसी समय एक युवा पुरुष षोड़स वर्षका सुन्दर शृङ्गार किए—इधर से होकर निकला हे प्यारी उस को देख कर मेरा हृदय गद्गद हो गया उसी दिवस से मेरा मन हृदय से बिलग हो उसकी मोहिनी मूर्ति में जा फंसा अब मैं क्या करूं कहां जाऊं किस से कहूं और यह भी मैं नहीं जानती कि वह कहां का है और कौन है॥

सवैया

अम्बर पीत कसे कटि सुन्दर मैनहू जाहि बिलोक लजो है। सांवली सी रंही मोहनी मूरत हेरेन को युवती नहीं मो है। मोसे बताव सखी हित के अरी तू हनुमान जो राखत छो है। ने कुचिते दुचिते कर मोह गयोरी दूते को जानिए को है ॥ १ ॥

हा सखी मुझ से अब नहीं कहा जाता

मोहिनी—अरी हे मञ्जरी तूं इतना पता दे कि वह कुछ कह गया है ?

मंजरी—नहीं सखी

मोहिनी—कुछ दे गया है ?

मंजरी—हाँ सखी मुन्दरी देकर कहा कुछ नहीं ॥

मोहिनी—हे सखी देखूं ॥

मंजरी—यह देख (अंगूठी दिखाती है)

(मन में)

मोहिनी—अहा इस पर तो मदन मोहन का नाम खुद्रित है विदित होता है कि उसी की है (प्रगट) हे प्यारी यह मुन्दरी तो मदन मोहन की है वह पुरुष अत्यन्त

सुन्दर वय किशोर भौ रूप में अद्वितीय और मथुरा-
पुरी का राजा है ॥

मंजरी—तो हे प्रिय उसके मिलने का कुछ प्रयत्न कर ॥

मोहिनी—हे प्यारी तूं धीरज धर मैं विचार कर कहती
हूं (विचार कर) अच्छा तूं एक काम कर ! !

मंजरी—वह क्या ?

मोहिनी—तूं एक पत्र लिख दे तो मैं जाकर तेरे चित्त-
चोर को दे आऊं ॥

मञ्जरी—पर हे प्यारी लोक लाज का डर है कहीं माता
पिता को प्रगट न हो जाय तो मेरी तेरी दोनों की
लोक हंसाई होवे ॥

मोहिनी—तूं गुप्त लिख दे तो मैं जाकर उनको दे आऊं
यदि वह आवेंगे तो उन को संग लेती आऊंगी चाहे
कुछ हो ॥

मञ्जरी—मैं लिखती हूं तूं शीघ्र आ ॥

(मञ्जरी पत्र लिखती है)

श्री ॥

बिछुरे हुयों का मिलावन हार श्री सच्चिदानन्द आ-
नन्द कन्द सर्व शक्तिमान जगदीश्वर देखिये विरह वियोग
रूपी रात्रि के अन्धकार को मिटा के सूर्य्य से जग प्रका-

थित करताहै और फुलवारी रूपी अनित्य संसार में हम तुम किस दिन परस्पर मिल के कली के समान खिलेंगे और विरहानल की उष्ण पवन से फूल रूपी मन जो कुम्हला गया है वह बसन्त रूपी ऋत की शीतल पवन के स्पर्श होने से किस समय लहलहायगा पर इसका संयोग परमात्मा के हाथ है जो धनी निर्धनी सब के साथ है हा। मन लगाने का यह फल है कि जब से आपका मुखारविन्द अवलोकन किया तब से चैन नहीं ॥

दोहा

तो मन की जानत नहीं, अहो मीत सुख दैन।
पै मो मन को करत है, मैंन महा बेचैन ॥

सोरठा

लाग्यो तो सों नेह, रैंन दिना कल ना परे।
प्रेम तपावत देह, तन मन अपनो दे चुकी ॥

दोहा

बिथा कथा लिखिए कहा सुन लीजे मम मीत।
चित्त ठिकाने है नहीं जब से लागी प्रीत ॥ १ ॥
कर कांपत पतियां लिखत जल भर आवत नैन।
कोरो कागद हाथ दे मुखही कहियो बैन ॥२॥

कागद भींजत नैन जल कर कंपत मसि सेत।
पापी बिरहा मन बसत विथा लिखन नहि देत ३॥
लिखन पढ़न की है नहीं कही सुनी नहीं जात।
अपने जियतें जानियो मेरे जिय की बात ॥४॥
यह गुण पाती ना लिखौं धरे रहौं जिय मौन।
तुम प्रीतम मन में बसत पाती बांचे कौन ॥५॥
अधिक क्या इति शुभम्

आप की शुभ चिन्तक

मंजरी

ले सखी तूं जा—मोहिनी जाती है॥

जवनिका पतन।

इति प्रथम अङ्क

अथ द्वितीय अंक।

(जवनिका उठती है)

स्थान राजा मदन मोहन की सभा॥

राजा—हे मित्र अब राज्य के कार्य से—

मित्रसिंह—जो अनुशासन श्रीमान का होवे ॥

राजा—हाँ ठीक है ! ! ! चोबदार को बुलाओ ॥

(चोबदार आता है)

चोबदार—महाराजाधिराज की जै हो क्या आज्ञा है ?

राजा—चोबदार तूं शीघ्र जाकर विदूषक को ले आ,

चोबदार—जो आज्ञा ॥

(चोबदार जाता है)

(चोबदार का विदूषक सहित प्रवेश)

राजा—क्यों मित्र विदूषक आए ?

विदूषक—जी हाँ आया और उस स्त्री ने आप को बुलाया है कि महाराज मेरे निकट कब आवेंगे ?

राजा—भला आप को आते तो विलम्ब न हुआ परन्तु रात कम गई ?

विदूषक—महाराज भलाई हो मैं गान विद्या में निपुण हूं यदि आज्ञा हो मेरी बनाईही सर्व रागनी हैं ॥

राजा—हे भाई जो तेरे मन भावे सो गा ॥

विदूषक—अच्छा गाता हूं सुनिए (गाता है)

सोरठ का ध्रुरपद ताल चौताला

पिया बिन मोहीं को रतियां बैरन भई,

चल न सकत कछु अचल भई रे दई ॥ —ए बीर बे पीर कैसे मैं धरों धीर ऐसो रे निठुर मेरी सुध ना लई रे दई ॥ पिया ॥ इतना संदेसा मेरो कहियो पिया से जाय भई हों बिहाल लाल मदन सतावत। धीरज के प्रभु तुमहीं गुपाल लाल चरण कमल लौ लाय रही रे दई ॥ पिया ॥

राजा—(मन में) अरे यह तो गन्धर्व विद्या में अति ही निपुण दृष्ट पड़ता है हाय इस समय में मेरी प्राणप्यारी कहां है हाय उस के हाव भाव कटाक्ष को देख कर मेरा चित्त विह्वल होगया ॥

मित्रसिंह—राजन् आप एका एकी क्यों ऐसे विह्वल हो गए कि मुखारविन्द का रंग पीत हो गया मस्तक पर स्वेद के कण छा गए कलेवर कंपायमान होने लगा मुझे इस संकेत से विदित होता है कि आप को कुछ सुध आगई, रणवांस में तो कुशल है न ?

राजा—हा मित्र अब मैं क्या कहूं बिरह बिथा अकथनीय है मित्र मैं एक दिवस देशाटन करता हुआ कञ्चनपुर की ओर निकल गया था अकस्मात एक पुष्प बा-

टिका में कुञ्ज भवन के तले बैठ गया तो एकाएक मोह मर्दन के भवन पर दृष्टि पड़ी तो उस्की कन्या मंजरी जो रूप में अत्यन्त लावण्यवती थी यौवन जड़ित अद्वितीय सोरह शृङ्गार बारह आभूषण किये अपने अटा पर चढ़ी घटा अवलोकन कर रही थी हा ! ! ! मित्र मैं उसके मन हरण बसीकरण चन्द मुख को देख बिह्वल हो गया पर नहीं जान पड़ता कि उस सुन्दरी गजगामिनी प्रिय भामिनी बरन दुति दामिनी कटि केहरी मृगसावक नैनो ने मुझे देखा या नहीँ किन्तु मैं तो दृष्टि पात मात्रही में बिह्वल दशा को प्राप्त हो गया (चोबदार से) चोबदार गान विद्या बन्द करो और नगर में ढिंढोरा पिटवा दो कि आज पर्य्यन्त कोई अपने गृहों में उत्साह न करें ॥

चोबदार—जो आज्ञा (जाता है)

राजा—लो अब मैं जाता हूं (मित्र से) मित्र तुम भी शयनागार में जाकर शयन करो ॥

(जाता है)

स्थान चित्रसारी ॥

(राजा पर्य्यङ्क पर उदास पड़ा हुआ है)

राजा—(मन में) हा ! ! ! प्राण प्यारी तुझ को मैंने क्यों

देखा और हाय दई मैं क्यों पुष्प वाटिका में गया जहां वो मन हरण मंजरी प्यारी, अब मैं किस से कहूं कहाँ जाऊं क्या करूं तेरे बिरहानल में भस्म हुआ जाता हूं और ऐसे ऋतुराज का सकुल, सदल, आगम है ॥

(मित्र सिंह का प्रवेश)

मित्रसिंह—हे राजन् तुम ऐसे व्याकुल क्यों होते हो वह भी राज पुत्री है और आप भी राज पुत्र हैं ॥

राजा—हे मित्र उस का चित्र मेरे हृदय में चित्रकारी सम लिखित हो गया है अब उस्का टलना दुस्तर जान पड़ता है ॥

कवित्त

कौन घड़ी करिहैं बिधना जब रूइयां आं दिलदार मुबीनम् । आनद होय तवै सजनी दर मुहबत यार निगार नशीनम् । प्राण पियारी मिले जबहीं दर बागे वस्ल गुलेशवि चीनम् । सूरत मित्र की चित्त बसी कवि गंग कहैं चूं नक्श नगीनम् ॥ १ ॥

चिहरे नूर बयान करूं महताब न लावत

ताव सका है। अब खूब बनी मह नीव ग़रूर जवानी का ज़ोर जफ़ा है। कह की हद कहां लौं कहौं कबिराज कहैं सब देख ख़फा है। हुस्न की यार बहार यही बस दीद मे यार दीदार नफा है ॥ २ ॥

राजा—हे मित्र जब दृष्टि किया था तब तो नेत्रों को इतना आनन्द प्राप्त हुआ कि उसका वर्णन करना अकथ है पर अब बड़ा क्लेश है कि उस सुख कारी मन हारी परम प्यारी मंजरी को कहाँ पाऊं क्या करूं ॥

मित्रसिंह—हे राजन् तुम हथा शोकाकुल होते हो और बिरह समुद्र में मग्न होते हो पर मेरे हृदय में इस प्रकार से भासता है कि कोई न कोई मनुष्य उन मन हरन प्यारी का सन्देशा लेकर आता है ॥

(चोबदार का प्रवेश)

चोबदार—हे राजाधिराज एक जोगन सिंह पौर पर अलख जगा रही है और वह कहती कि मैं राजा के दर्शन करूंगी यदि दर्शन न होंगे तो अपना आत्मघात करूंगी ॥

राजा—अरे देख शीघ्र जा उस को ले आ ऐसा न हो कि वह आत्मघात कर ले ॥

(जाता है)

(जोगन का प्रवेश)

राजा—हे जोगन तू कौन है और कहाँ से तेरा आगमन हुआ है ॥

जोगन—श्री महाराज मैं उत्तरा खण्ड से आती हूं और आप के दर्शन करने की अभिलाषा थी सो आज पूर्ण हुई परन्तु कुछ निवेदन करने को उद्यत हूं पर जो आप ध्यान देकर सुनें ॥

राजा—अच्छा आप कहैं मैं चित्त सहित सुनता हूं ॥

जोगन—हे राज पुत्र आप को हमारी प्यारी राज दुलारी ने जब से अवलोकन किया है तब से अन्न जल त्याग दिया है और दिन प्रति दिन क्षीण अवस्था को प्राप्त होती जाती है ॥ और यह पाती (पाती दिखला कर) अपने हस्तकमलों से लिख कर आप के शरण में भेजी है सो यदि आज्ञा हो तो दिखाऊं—

राजा—अहा धन्य है हे जोगन तू ने तो मुझे वह शुभ सम्वाद सुना कर कृतार्थ किया, अब दे मुझे मेरी प्यारी

मञ्जरी की पाती जिस को अवलोकन कर के अपनी विरहानल को ठंढा करूं ॥

(जोगन पाती देती है)

दोहा ।

कर ले चूम चढ़ाय सिर, उर लगाय भुज भेंट ।
लह पाती प्रिय की पिया, भेंटत धरत समेट ॥

(पाती पढ़ कर)

पढ़ पाती आनद भयो, मुख से कहो न जाय ।
पुन २ बांचत पुन धरत, पुन २ लेत उठाय ॥ २ ॥

हा मञ्जरी मैं कहां हूं और तूं कहां है ।

(मुर्छित होकर भूमि पर गिरता है)

जोगन—अरे हाय यह तो राज पुत्री से अधिक व्याकुल है इस पर गुलाब नीर छिड़कूं (छिड़कती है)

राजा—(सुध सम्हाल कर) हा प्यारी मञ्जरी तेरी सांवली सूरत सलोनी मेरे नेत्रों से बिलग नहीं होती (सखी से) हे सखी जब तक मैं पत्रोत्तर लिखता हूं तब तक तूं ठहर और विश्राम कर (पत्र लिखता है)

बिषय प्रश्न ।

चौपाई

स्वति श्री मम प्रान पियारी ॥
चन्द्र मुखी उ मण्हा सुकुमारी ॥
गज गामिनि प्यारी मृग नैनी ॥
शील वन्त नेही पिक बैनी ॥
परम सोहावन चम्पक बरणी ॥
ज्ञान ध्यान तन मन दुख हरणी ॥
तुम समान सुन्दर जग माही ॥
अबलन मांह कोऊ है नाही ॥
अङ्ग अङ्ग शोभा सर सावत ॥
चन्द्र बदन लख चन्द्र लजावत ॥
उपमा चन्द कहो किमि भामिनि ॥
दूषित चन्द अदूषित कामिनि ॥

दोहा ।

सकल शुभपमा जोग्य तुम, सर्व गुणन की खानि
प्यारी परम सुहावनी, सुन्दर कृपा निधान ॥
यहां क्षेम सब भांति है, किरपा श्री भगवान ।
तव कुशला जगदीश से, नित चाहत मम प्रान ॥

तुव बिछुरन जो दुख मिलो, कहा लिखों किरपाल । पत्री गागर तुल्य है, सागर रूप हवाल ॥

चौपाई ।

बिरह पीर ते रहों अधीरा ॥
रह रह उठत सदा है पीरा ॥
दिन २ बढ़त यहां बौराई ॥
प्रान रहे तन में घबराई ॥
समुद बिथा अति है भर मानो ॥
लहरत अह सो न जात बखानो ॥
प्रेम अगिन प्रज्वलित है तन में ॥
लाग्यो ज्यों दावानल बन में ॥
ओठन आय रहे मम प्राना ॥
करन चहत ते जल्द पयाना ॥
तिहि अवसर भेजी तुम पाती ॥
देखत ताँहि जुड़ानी छाती ॥
प्रान पलट घट में फिर आए ॥
मनहु सजीवन पाती लाए ॥
पाती नाहि सजीवन जानो ॥
मुए तनहि अमृत कर मानो ॥

दोहा।

कौन वस्तु मम निकट है, करौं निछावर तोर।
प्रान आपने वारिहौं, मोती मानिक ठौर॥

सवैया।

पाती जो आई प्रेम पगी सुख छाय रहे लख के मन माहीं। प्रान निछावर हैं मम वा पर और नहीं कछु मो ढिग पाहीं। मूल सजीवन खाय जिए वह देख जिये जिह के जिव नाहीं। अब एती कहौं तुम सें सजनी तुम राखियो पीर हमारी सदाहीं॥

कवित्त।

कमल उछाह जैसे सूरज प्रकाश होत कुमुद उछाह जैसे चन्द्रमा परसते। भवरन उछाह जैसे आगम बसन्त जान मोरन उछाह जैसे बरसा सरसते। हंसन उछाह जैसे मान सर बीच होत साधन उछाह इच्छा आवत अरसते। सब को उछाह यह भांति कर होत है हमरो उछाह प्यारी तुम्हरे दरसते॥

सवैया ।

नैनन को तरसै ये कहां लो कहांलो हियो बिरहागि में तइयै । एक घड़ी न कहूं कल पाई कहां लों प्रानन को कल पइयै । आवै यही अब जी में बिचार प्यारी तिहारे यहां चल अइयै । मान घटे ते कहा घट है तुम को सजनी जो देखन पइयै ॥ १ ॥

आंखि चहें मुख देखन को अरु श्रवन सुबैन सुनाय रहें । अधरा अधरान रसाल चहें हिय चाहे हिये में लगाय रहें । भुज चाहे गले को हमेल बने कर चाहें कुचें परसाय रहें । सब अंग इते तव अंग बिना तरसे कब लों तरसाय रहें ॥ २ ॥

दोहा ।

केवल तोह तपा वही, मैंन अहो सुकुमार ।
भसम करत पै मो हियो, तूं चित देख बिचार ॥

सोरठा ।

भानु मंद कर देत, केवल गंध कमोदनिह ।
पै शशि मंडल स्वेत, होत पात के दरसते ॥

दोहा ।

सो अब लिखबे को नहीं, आगे है कछु काम ।
लिखनी कर सें गिर पड़ी, पाती भई तमाम ॥

आप का शुभ चिन्तक
मदन मोहन ॥

हे मित्र पाती सुनाऊं देख इसका निबन्ध उत्तम है या नहीं ?

(सुनाता है)

मित्र—हे मित्र अत्यन्त उत्तम है ।

राजा—हे मोहनी ले (पाती देता है) प्यारी मनहारी चन्द्र बदन मुख दुति भारी परम प्यारी के हस्त कमल में पाती अर्पण करके मेरी अत्यन्त समागम अभिलाषा कहियो अधिक क्या कहूं ।

मोहनी—तो मैं पयान करती हूं ।

राजा—हे मोहनी यद्यपि तेरे योग्य संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो तुझे पारितोषक में दूं पर कुछ देता हूं (देता है)

मोहनी—(हाथ पसार कर) हे राजन् आप के सन्मुख यह तुच्छ है पर मुझे सन्तुष्ट कारी है तो अब मुझेआज्ञा हो॥

राजा—हे प्यारी तूं शीघ्र जा ॥

(जाती है)

इति द्वितीय अंक।

(जवनिका पतन)

अथ तितीय अंक।

(जवनिका उठती है)

(स्थान राजा मोह मर्दन की सभा)

(राजा रत्न जड़ित सिंहासन पर सुशोभित है)

मोहमर्दन—अहा देखो उस सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की कृपा से मेरी प्रजा सब प्रकार से अल्हादित है (मन्त्री से) मन्त्री अब टुक मुन्शी कालिका प्रसाद को तो बुलाओ।

मंत्री—जो आज्ञा।

(चोबदार सहित मुंशी जी का प्रवेश)

मुन्शीजी—जनाब अदाब अर्ज, खिदमत अकदस में बन्दः हाजिर है इरशाद फरमाइए।

राजा—मुन्शी जी आप ने नगर के कोतवाल से कुछ बात चीत की थी।

मुन्शीजी—जी हजूर यह तावेदार जर्रा वेमिकदार बजद्द दवाम निमक खार हुक्म आली मुदाम ब-

सरो हुक्म तामील करता है बन्दह ने हस्बुल इ-रशाद फैज़ बुनियाद हुज़ूर के उसी वक्त कोतवाल से बना वर इन्तज़ाम शहरं तज़किरा पेश किया था ।

राजा—बहुत उत्तम (मंत्री से) मंत्री आज के दिवस चित्त प्रसन्न होने के कारण मेरी पूर्ण आकांक्षा है कि मैंने बहुत दिवस व्यतीत भए पुत्री (मञ्जरी) को नहीं देखा इस से राज मन्दिर में सन्देश शीघ्र भेजो ।

मुनशीजी—जो आज्ञा (चोबदार से) हे चोबदार रणवास में सूचना करो कि राजा महल में पधारने वाले हैं ।

चोबदार—जो आज्ञा (जाता है)

(जवनिका पतन)

(जवनिका उठती है)

(स्थान रनवांस)

(रानी बसन्त कुमारी सिंहासन पर सुसोभित है)

(दो सहेली खड़ी हैं)

रानी—हे चपला महाराज को देखती रहियो कहीं अ-कस्मात न आन पधारें ।

चपला—आप कहती हैं कि कहीं आ न आवें वह देखिए आही गए (बैतालिकों के गाने का शब्द सुन पड़ता है)

नेपथ्य में

[वैतालिक गाते हैं और बाजों की धुन सुन पड़ती है]

राग भैरव।

प्रगटहु रबि कुल रबि निसि बीती प्रजा कमल गन फूले। मन्द परे रिपुगन तारा सम जन भय तम उन मूले। नसे चोर लम्पट खल लखि जग तुव प्रताप प्रगटायो। मागध बन्दी सूत चिरैयन मिलि कल रोर मचायो। तुव यश शीतल पौन परसि चटकी गुलाब की कलियां। अति सुख पाइ असीस देत सोइ करि अंगुरिन चट अलियां। नेम धर्म में थित सब द्विज जन प्रजा काज निज लागे। रिपु युवती मुख कुमुद मन्द जन चक्र वाक अनुरागे। अरघ सरिस उपहार लिये नृप ठाढ़े तिन कहु तोखौ। न्याव कृपा सो ऊंच नीच सम समझि परसि कर पोखौ॥

(रानी सादर युत अर्घ देकर राजा को)
(हेम मय सिंहासन पर)
(आरूढ करती हैं)

राजा—हे प्रिये मैं अत्यन्त हर्ष को प्राप्त हुआ—

रानी—मैं तो आप की दासी हूं ॥

राजा—हे प्रिये आज तुम ने वेसर क्यों नहीं पहनी पर तुम्हारा चन्द्र मुख बिन ही नथ के दूना दीप्त मान है यथा—

कवित्त ।

मुक्ता कृत जलज उतार शुभ नासका से करन कृतज्ञ सो सुच्छ प्रति गुच्छमान । पजन प्रमत्त तिस मिसल नच्छत्रन की प्रथम नच्छत्र पति डेवढ़ी प्रमोद मान । खेद कान कुण्डली में सुकृत प्रमुध्य बुद्धि सुकृत प्रसिद्ध बुद्धि विधवत में बोधमान । पच्छ ताद पूनो आज अरि बिन्द उन्यो उत विन नथ सून्यो दूनो दूनी मुख दीप्त मान ॥

रानी—(लज्जित होकर) फिर (हाथ जोड़ कर विनय

करती है) दासी का अपराध क्षमा होवे मैंने आप के भय से बेसर नहीं पहनी ॥

राजा—हे प्रिये क्या कारण ?

रानी—महाराज मैंने एक लटकन आप की विना आज्ञा के विरचित कराया है यदि अनुशासन हो तो पहिन कर दिखाऊं ॥

राजा—हे प्रिय मुझे उसके देखने की अत्यन्त आकांक्षा है

(लटकन पहिन कर रानी का प्रवेश)

राजा—अहा यह लटकन नहीं है किन्तु मेरे प्राणों के फांसने का फंदा बनावाया है यथा—

कबित्त ।

जड़े हैं जवाहिर हीरा मोती लगे आस पास तारा गन मध्य मानो बैठो बड़ो चन्दा हैं । कीधों सर सरस गुलाब बीच सांध राखो कीधों अति प्यारो लागे ओस कैसो बुन्दा है । कीधों जसवन्त सिंह शोभा को अंकूर बनों मेरो मन मोहबे को कीन्हो काम कन्दा है । झूमर२ झुकर२ झुमाई लेत अधरन पर लटकन न होय प्रान फासबे को फन्दा है ॥

सो हे प्रिय तुमने ऐसा नाटक्म बनवाया है कि मैं देखते ही हर्षयुत हो गया अब हे प्रिये यह तो कहो कि पुत्री (मंजरी) कहाँ है (चंपला से) हे चपले तु पुत्री को शीघ्र ले आ ॥

(चपला सहित मञ्जरी का प्रवेश)

(मंजरी मस्तक झुका कर प्रणाम करती है)

राजा—हे प्यारी पुत्री कुशल हो ? (मन में) देखो मंजरी आम की मंजरी के भाँति दिवस प्रति दिवस यौवनावस्था को प्राप्त होती जाती है और इस का वर इसके तुल्य नहीं मिलता इस से इसके योग्य वर शीघ्र ढूढ़ना चाहिये (प्रकट) हे पुत्री तू जा (रानी से) प्रिये मैं अब सभा को जाता हूं ॥

(जाता है)

(रानी आदर पूर्वक विदा करती हैं)

(जवनिका पतन)

(जवनिका उठती है)

(स्थान मञ्जरी का मन्दिर)

मञ्जरी पर्य्यङ्क पर लेटी है और चपला बैठी है

मंजरी—हा बसंत गया वरसा ऋतु का आगम हुआ किंतु

मोहिनी का आगमन हुआ हा दई मुझ अनाथनी की सुध ले (अरे वे पीर मदन) अहा मैं किस का नाम लेती हूं कामदेव तूं तो रति सदृश स्त्री रखता क्यों मुझ दुखिया को भस्म करता है ॥ अरे क्या मोरों का बोलना कोयल का कूकना मेघों का गरजना वहां कदापि नहीं है तब तो मोहिनी का आगम नहीं हुआ ॥ यथा ॥

कवित्त ।

कीधौं मोर शोर तजि गएरी अनत भज कीधौं उत दादुर न बोलत है एदई । कीधौं पिक चातक पपीहा काहू मार डारे कीधौं पग पन्थ लोक अन्तरिच्छ होगई । लालन कहत घर आए न लालन ज्यौं त्यौं बिपरीत रीत मानो उते ठई । मदन महीपत की दुहाई मिटी देश हूंते मेघ काहू जूझे कीधो दामिनी सती भई ॥

कीधौं वह देश घन घुमड़न बरसत कीधौं कीधौं मकरन्द पन्थ नदी नद मर गे । कीधौं पिक चातक चतुर चकवा के बोल कीधौं मत्त

दादुर मधुप मोर मर गे । कीधों मेरी जान
आली प्यारी आवत न श्याम तन पावस के जीव
कीधों महि से निकर गे ॥ कीधों पांचो बाण
हर फेर के भस्म कियो कीधों पंचवान हूं के
पांचो बाण जर गे ॥

हा प्यारी मोहनी न आई और यह वर्षा ऋतु देखो
वृष्टि होने लगी यथा—

कवित्त ।

आए मड़ उमड़ ऐंड़ बेंडे बड़े तटप तट
फड़ान लागे तटफन सौंहैं ये । झिल्ली गण
झिझकपि झझा झाझ झोकन सो झिन कि-
नान लागे झीनी २ झिनकिन सोहैं ये । पूछत
प्राण प्यारी अगस्त को उद्दोत जान पजन ल-
खन अंकुश अनेक विधि सोहैं ये । सिंध उद
सोहैं दाब दसहूं दिसों हैं आज बादर बरसोंहैं
बरसोंहैं सिदसोंहैं ये ॥

॥ लावनी पावस ॥

सखि वर्षा ऋतु घन घोर घटा घिर आई,

बिन कान्ह करत बेचैन मैन दुख दाई, टेक—आयो पापी पावस को साथी सावन, बादल झू लागे गरजि २ डर पावन, लागी निज पति की प्यारी सखियां गावन, किहि भांति बिताऊं काली रैन भियावन, सन २ अब सन कै हाय पवन पुरवाई ॥ बिना कान्ह करत—१ ॥ दादुर पिक कोकिल मोर चहुंकित बोलैं, जित तित बन बागन माहि करत कलोलैं, कहु इन्द्र बधू के कन्द गैल मं डोलैं, यमुना तट झूलै युवती करि२ गोलैं, प्यारी करि पिय को ध्यान रही मुरझाई ॥ बिन—२ ॥ कोइ मुख सो सटि २ पिय के हिय में सोवै, मुख चूम २ अरु झूमि बिरह दुख खोवै, हम सूनी सेज निहारि सबै निशि रोवैं, निज नैनन जल बर्षाय हाय मुख धोवैं, कोउ अबला दुख देख न होत सहाई ॥ बिन—३ ॥ जल बुन्द रैन दिन रिम झिम रिम झिम बरसै, तजि भूख प्यास सुख नींद सदा जिय तरसै, तापै निर्दई

मनोज रोज़ मोहि गरसै ॥ मन बिह्वल दशा निहार सौति मन हर्षैं, नित इत उत डोलौं कान्ह बिना बौराई ॥ बिन— ४ ॥

। चौंक कर । अरे क्या मोहनी आई । नहीं २

चपला—हे मनोज तू सम्हाल के मार यह ईश नहीं है बरन कोमल बाला है यह तेरे विरह के बाण न सह सकेगी ॥

कवित्त ।

गंग नहीं मुकता भरी मांग है चन्द नहीं यह उद्यत माल है । नील नहीं मकतूल की पुञ्ज है शेष नहीं सिर बेणी विशाल है । विभूति नहीं मलयागिर शोभित बिजया है नहीं हरि विरह बिहाल है । एरे मनोज सम्हार के मारियो ईश नहीं यह कोमल बाल है ॥

(राज पुत्री से)—हे राज पुत्री तू अधीर कदापि न हो जिस के विरह सागर में तू निमग्न हो रही है वह तुझे शीघ्र मिलेगा और तेरे कमल रूपी हृदय को सूर्य रूपी प्रकाश से विकशित करेगा ॥

राजपुत्री—हे सखी अब मोहनी न आई उस को देखकर मैं अपने हृदय को शांत करती हा अब मैं क्या करूं ॥

। नेपथ्य में ।

। मैं आती हूं ।

। मोहनी का प्रवेश ।

राजपुत्री—अहा यह कौन आती है टुक देखूं तो (देखती है) अहा यह तो वही है ॥

(चपला से) हे चपला मुझे आज ऐसा आनंद प्राप्त हुआ कि जैसे दरिद्री को बड़ी निधि प्राप्त हो (मोहनी) हे प्यारी सहेली कुशल तो हो ? ॥

मोहनी—आप की अनुकम्पा से आज पर्य्यंत कुशल पूर्वक हूं॥

मंजरी—कहु राज पुत्र तो कुशल से हैं न ? ॥

मोहनी—हे राजपुत्री ईश्वर की पूर्ण कृपा से राज कुमार कुशल पूर्वक हैं और तेरे सर्व मनोर्थ सिद्ध भए अब तूं उठ और इस पत्र को पढ़ (देती है) तेरा प्रीतम तुझे अवश्य मिलेगा ॥

मञ्जरी—(अंचल पसार कर) ला दे ॥

। पत्री लेकर छाती से लगा कर ।

अहा धन्य है मेरे प्रान प्यारे की यह पाती है (पढ़ कर विह्वल होती है)

। मुर्छित होकर भूपतन होती है ।

। दो सखी सम्हालती हैं ।

। जंवनिका पतन ।

। इति त्रितीय अंक ।

—❋❋❋—

। अथ चतुर्थ अंक ।

। जवनिका उठती है ।

(स्थान मोहनी सहेली का मन्दिर)

(राजकुमार आते हैं)

मोहनी—हे राजपुत्र स अवसर में आप आए हमारी सखी बहुत बिह्वल है ॥

राजपुत्र—हां सखी ठीक है तुम तो अपनी ही जानती हो पर बीती क्या जानो ॥

मोहनी—ठीक है (हंसी से) प्यासा कूवां के निकट आता है पर कुवां प्यासे के समीप नहीं आता ॥

राजकुमार—हे सखी अब मुझे धीर्य्यं नहीं है तूं मंजरी

से समाचार कह दे कि राजपुत्र तुम्हारे दर्शन हेतु आए हैं ॥

मोहनी—जो आज्ञा जाता हूं ॥

(जाती है)

(जवनिका पतन)

(स्थान मञ्जरी का मन्दिर)

(मञ्जरी पृथ्वी पर बैठी है)

मोहनी—हः हः हः हः हः ॥

मंजरी—अरी तू कैसी हो गई बावरी या उनमत्त जो ऐसा ऐसा ठट्ठा मार कर हंसती है ॥

मोहनी—मुझे आज कुछ हिय पोषक पारितोषक मिले तो कहूं ॥

मंजरी—अरी कह तब दूंगी ॥

मोहनी—प्रथम लूंगी पश्चात कहूंगी ॥

मंजरी—ले (हार देकर) अब तो जिह्वा कर ॥

मोहनी—कहूं क्या जिन मुक्ताओं का यह हार है सो धारण करने वाला—

मञ्जरी—(मन में अति उत्कण्ठा होकर प्रगट) चल तुझे हंसी ही लगी रहती है जा चर !!!

मोहनी—सखी मैं तेरी शपथ करती हूं कि राज कुमार मेरे गृह आ गए ॥

मञ्जरी—कैसे आए?

मोहनी—छिप कर ॥

मञ्जरी—तो हे सखी अब मिलाप की चिन्ता कर कि उन का आगम इस मन्दिर में किस प्रकार होगा।

मोहनी— हे सखी मैं लाऊंगी आज सन्ध्या समय तू चैतन्य रहना ॥

मञ्जरी—अच्छा सखी मैं तुझे बहुत प्रसन्न करूंगी जो तूं हमारे प्रान नाथ को मिलावेगी ॥

(जाती है)

(मोहनी सहित राजकुमार का प्रवेश)

राजकुमार—(मन में) अहा धन्य है देखो भवन किस प्रकार से अलंकृत है ॥ यथा—

कवित्त ।

रचित विश्वकर्मा नव सुन्दर सदन जनु मर्कत मनीन की उपमा सरसाती है। कञ्चन के खंभ नव रत्न मय लसत दुति बिद्रुम की नारी तामें उद्दिति प्रभाती हैं। त्रिपुर प्रकार भृत्य आलय

बिलोकि ताहि रंभा रमा आदि हिय हुलसाती हैं। भनै जगेश्वर दयाल उपमा बिलाती कबि मति खिसयाती पै न ता को पार पाती है॥

पर प्रगट नहीं होता कि राज पुत्री कहाँ बैठी है अहा देखो वह पर्य्यङ्क पर लेटी है उस के कोमल कच अलि अवलि मद गञ्जन कपोलन पर से कठिन कठोर कमठ सम कुचों को स्पर्श कर रहे हैं यथा॥

कबित्त।

तम तम तामद रमाद घन तोयदसी नीलक जटाम पाट जट प्रजटी सोहै। पजन प्रकंदर्प दीपत छटासी छबि हाट स्फटक ओट चटक पटी सोहै। कच कुच दुबिच बिचित्र चित्र चितवत बक्र छूट लट पाट तट घट लिपटी सोहै। बिरह अशुभ पक्ष पी सों प्रदोश पाय पन्नगी पिनाकी पद पूज पलटी सोहै॥

लटकी छबि देखि वहां तरुनी तन छाह परी पिय रे पटकी। पटकी कहु प्रीति बिलोकन पै नहि मानत नेक कही हटकी। हटकी हट

सौ हट जाय उतै कब नन्दन चाल चलै नटकी। नटकी कहुं प्रीति विलोकन पै लट छूटि कपोलन पै लटकी ॥

अहा इसके शरीर की प्रभा तो देखो ॥

कवित्त।

प्रीति मिक मिश्रत मुकेसन समस्त सारी जुगत जेब वारी जुग में जगी परै । हीरन की पट्क प्रकाश प्रति बिम्बन तें पग पग पग जग मग उमगी परै । मर्कत मनीन कन चन्द्र कन चक चौंध कैधौं पजन प्रिया के अंग अद्भुत फबी परै । बहक सुगन्ध चन्दनादिक महक मूद पावक लहक दाह दाहक दबी परै ॥

अहा देखो इस के कुच कैसे हैं ॥

कोई कहै कुच कञ्चन कुम्भ सुधारस सौ भर राखि हैं ओऊ। श्रीफल शंभु सुमेर समान मनोज के गेंद कहैं कवि कोऊ । मो मन में उपमा अस आवत भाषत हौं पुनि होउन होऊ।

जीत सबै जग औंध धरे हैं मनोज महीप के दुन्दभी दोऊ ॥

अहा देखो जो सारी पहने है और कछौटा दिए हैं इसकी उपमा क्या दूं (सोच कर) अहा ठीक है यथा ॥

कवित्त ।

चिमट चढ़ो है जुग जगम बिजोम जुथ्य फिरत कुलम्त लङ्क फरकत कनीको है । ईड़ तन तुकन पै मुमज्जर जड़ो है एड़ उमड़ मठो है सिंधु कुन्दन पनीको है । पजन प्रवेश लेश दपीक दिनेश देश सुभग सुदेश देश हग दाम-नीको है । डीठ पट जोटा पट छोट अति छोटा कटि छोट अति छोटा कै कछोटा कामनीको है ॥

कवित्त ।

नैन पै मीन मृग नैन पै खंजनी भौंह पै धनुष धर सुरत मारीं । दसन पै दामिनी बचन पै कोकिला अधर पै बिंब रह रह सम्हारीं । जघन पै कदलि कटि लंक पै केहरि चाल पै

चाल गजराज टारों। ज्योति पै ज्योति छवि अंग पै गंग सो नायका बदन पै चन्द वारों॥

अहा अब मैं कहां तक इस नायका के अंग का वर्णन करूं अर्थात् यह तो रूप का समुद्र ही है॥ यथा

रूप को समुद्र जामैं छबि की तरंगे उठे कोमल सिवार कच शोभित अरथ के। अधर प्रबाल लाल ग्रीवा कल कम्बु कैसी कमठ कठोर ते उरोज गन गथ के। लाल कहै लाल डोरे जकरे जंजीरन सो सजल तरत जे चलैया प्रेम पथ के। बाद्वान बरुनी न छांड़ दे हराधे नैन लाज भरे राजत हैं जाहज मनमथ के॥

(मन में) अहा जब रूप समुद्र हुआ तो यह नायका समुद्र के तद्दति हुई पर समुद्र में से तो चौदह रत्न निकले हैं इस नायका में कौन चौदह रत्न है? हां ठीक तो यथा—

रूप रङ्ग बिधु बदन बचन अमृत बिष चितवन। हय चंचल गज चाल संख गींवा प्रत लछन। मन पुतरी सोइ उदध कल्पवृक्ष शील धेनु धर। भौंह धनुष मद काम कल्पजा हगन

हष्ट कर। कहिं कोशो वैद्य धन्वंत यह एक निधन जा दुख दहन। सुर असुर तथा दध मथन किय सुचिय तन में चौदह रतन॥

(प्रगट) हे राज पुत्री तू रूप में अद्वितीय है पर तेरी सभा में बड़ा अविचार है॥

राजपुत्री—सो कैसा॥

राजपुत्र—हम विदेशी देशान्तर में आए पर यह कोई नही कहता कि तुम कौन हो?

सखी—हे महाराज हम तो अपना कार्य पूर्ण कर चुकी अब आप जाने या यह (मंजरी के तरफ) हम तो पयान करती हैं॥ (जाने लगती है)

मंजरी—(दौड़ कर) हे सखी तु मुझे अकेली छोड़ जाती है तुझे मेरी सपथ है तू मत जा॥

सखी—हे सखी तू काहे को अकेली रहेगी तेरे निकट तो ऐसा अद्वितीय अनुपम पुरुष है कि जिसका कलेवर लावण्यता से जड़ित है और आज पर्य्यन्त कोई ऐसा दूसरा पुरुष दृष्ट पात मात्र ही में नहीं आया॥

मंजरी—चुप रहो तुम्हें तो हंसी ही सूझती है॥

मोहनी—हे प्यारी मंजरी टुक देख तो कि राज पुत्र कब से खड़े हैं और तू नेकहु नहीं बोलती॥

मंजरी—यह तो आप ही कहते हैं ऐसा कौन है जो उन्हें कहे (आदर देती है)

(सखियाँ मंगल गाती हैं)

दोहा ।

प्यारी प्रीतम एक से बैठे हिल मिल पास ।
मङ्गल सखियां गावती प्रमुदित सहित हुलास

मोहिनी—हे मंजरी अब मैं जाती हूं भवन रक्षनार्थ चपला रहेगी, और मैं शीघ्र पलट कर आती हूं ॥

मञ्जरी—अच्छा सखी अपना आगम शीघ्र दरसाइयो ॥

(मोहनी जाती है)

मंजरी—हे आर्य्य पुत्र आप ने इस दासी के निमित्त अत्यन्त क्लेश उठाया और मैं इस योग्य नहीं हूं कि आप की सेवा करूं मेरा अपराध क्षमा हो ॥

राजपुत्र—धन्य है हे सुन्दरी तेरे दर्शन ही से मैं कृतार्थ अवस्था में स्थित हुआ अब भ ग्यवान हूं कि आप की कृपा दृष्टि रहे ॥

मंजरी—हे आर्य पुत्र मैं आप की दासी हूं परन्तु इस प्रथम समागम को आप भूल मत जाना ॥

दोहा ।

भूलत निज उपकार नित, तिमिपर को अपकार

मित्र भूलनी बात सो, मोहि जन देहु बिसार ॥

राजा—प्रिये ! ! ! ऐसा होना असंभव है ॥

मंजरी—तो वचन दो ॥

राजा—अच्छा प्रिये (दोनो हाथ ठोंकते हैं)

(इति जवनिका पतन)

चतुर्थांकः ।

अथ पंचमांकः ।

(जवनिका उठती है)

(स्थान अटा के ऊपर मदन मंजरी और दो सहेली चपला मोहिनी सहित)

राजा—हे प्रान प्यारी देखो यह ऋतु पावस है कैसी शीतल मन्द सुगन्धमय वायु बह रही है प्रत्येक ओर कोयल कूकती हैं और पपीहा पीव २ बनो उपवनों में रट रहे हैं—

कवित्त ।

केकिन के नाच गान कुहू कूक कोकिल की रटन पपीहरा की नाम धुनि ठानी है । बूंदन

के पात अलि लोचन श्रवत जात जाय तृण जात पुलिकावलि निशानी है। माल है विशाल बक पांतिन की दीनदयाल बार बाह नये वृन्द गन्दता बखानी है। झला झल झल चपला की द्युति ध्यान भई पावस न होय भक्ति कला प्रगटानी है॥ घन की घनक घन घटा घनकत आली दामिनि दमक देत दीपक प्रकाश है। बूंदन के फूल जाल धनुले विशाल माल आये झुक मेघ सो प्रणाम को हुलास है। मोरन के शोर चहुं ओर विनय दीनदयाल पवन झकोर चौकर आस पास है। पूजन करत प्रीति रीति प्रगटाय यह पावस न होय परमेश्वर को दास है॥ एकै घन घूमि २ घेरा दै घुमड़ जात एकै घमगड घन बांधत तरारे हैं। एकै हरे हरदी सेत जरदी जमुरदी रंग एकै है सुरंगे बदरंगे धुआ धारे हैं। कहैं अमरेश यों अषाढ़ घन घेरि आयो नदन नदीन में विशेष जल बाढ़े हैं। पट से पटोहा से तिखूंटे चौखुटे हू गढ़ के गढ़ी

के औ मढ़ी के ठार ठारे हैं। कैसी करो हेरि जिहि दसहु दिशान घेरि फेरि महि मण्डल घु-मड़ घन छायोरी। पीड़त पपीहा परमारथ करि पीव२ दादुरन बोल तन अतन जगायोरी। कहत किशोर लागो पवन झकोरन यों मोरन लै मधुर मलार सुर गायोरी। बड़े२ बूंदन बि-लन्द बाट धर बीर अबहीं बरस गयो फेरि झुक आयोरी॥

घूमि कै चहुधां धाय आवे जलधार तड़ित पताके बांके नभ में पसरिगे। द्विज देव कलि-न्दी समीपन में नीपन के पात २ जोगिनी ज-मातन ते भरिगे। चातक चकोर मोर दादुर सुभट जोर निज २ दाउ ठाउ ठावन संभरिगे बिनय दुराय अब कीजे कहा माय हाय पावस महीप के चहुधां डेरे परिगे॥

मञ्जरी—पर हे प्राण नाथ! आप एक बिनती मेरी मान लीजिए॥

राजपुत्र—हे प्यारी उत्तम है तुम कहो।

कवित्त ।

मञ्जरी—आई सुहाई नई वर्षा ऋतु रीझ हमारी कही पिय कीजिए। जैसे ही रंग लसे चुनरी तैसोई पाग तुम्हूं रंग लीजिए । झूला पै झूलहि एकही संग मुबारक एतो कह्यो पुनि कीजिए । जैसे लसै घनश्याम सो दामिनि तैसे तुम्हारे हिये लग भीजिए ॥

राजपुत्र—अच्छा प्यारी ॥

(नेपथ्य में बड़ा कोलाहल होता है)

(पकड़ो पकड़ो मारो मारो का शब्द)

(चपला सहमित दौड़ती हुई आती है)

चपला—हे राज पुत्री हम सभों महाराज ने यह समाचार श्रवन किया है कि मञ्जरी के भवन में तस्कर है और आज्ञा दी है पचास पद चर और पचास अश्वारूढ़ जांय और जिस प्रकार से बने तस्करों को पकड़ लावें सो मैं आप को समाचार देने आई हूं अब जो जानो सो करो ॥

राजपुत्री—(घबड़ा कर) हा यह क्या अनर्थ उपस्थित हुआ पर क्या हुआ है आर्य्य पुत्र तुम चित्त में धैर्य्य धारण

करो कुछ भय नहीं है पर मैं देखूं तो (देखती है) है ठीक है वह देखो, अश्वारूढ मनुष्य आ गए (राजपुत्र से) हे कुंवर अब तुम इस समय कहीं गुप्त हो जाव में बात बना लूंगी ॥

(राज पुत्र का भवन में गुप्त होना और उसी समय पद चर और अश्वारूढ़ का मनुष्यों सहित भवन में प्रवेश)

पदचर—हे राज पुत्री वह राज कुमार जिसे तू ने बुलाया है कहाँ छिपा है शीघ्र बता ?

राजपुत्री—(डाँट कर) अरे तुम बिना आज्ञा मेरे भवन के भीतर क्यों आए, तुमको अत्यन्त क्लेश दूंगी, सजग हो, और जिह्वा को सम्हाल कर आनन से वाक्य प्रगट करो ॥

प्यादे—बस हमें तेरा किञ्चित मात्र भय नहीं परन्तु राजाज्ञा पालन करना हमें अत्यन्त अवश्य है ॥

(पर्य्यंक की ओर जाकर)

अरे दौड़ो यह तस्कर है बांधो बांधो (बहुतेरे दौड़ कर पकड़ते हैं)

(राज पुत्री मुर्छित हो कर पृथ्वी पर पतित होती है)

(जवनिका पतन)

स्थान (मञ्जरी का भवन)

(मञ्जरी पृथ्वी पर पतित विह्वलावस्था मे पड़ी है)

(चपला और मोहिनी खड़ी हैं)

चंपला और मोहिनी—अरे दई यह क्या अनर्थ हुआ हा हमारी प्रान प्यारी सखी जिस्के कभी हंसी के भी अश्रुपात नहीं आए और अब विह्वल अवस्था को प्राप्त है हा राज पुत्र को श्री महाराज ने कारागृह में कर दिया देखो प्रसन्नता के पश्चात् कैसा क्लेश उत्पन्न भया हा ! हे सखी कुछ तो सुध सम्हाल और अपने खञ्जन मद गञ्जन नेत्रों को उघार, देख हम कब से खड़ी तेरे निमित्त रुदन कर रही हैं परन्तु तू उत्तर नहीं देती और मुर्छा से सजग नहीं होती (ऊंचे स्वर से) हे सखी उठ अरी अब भी तो सुन, हे ईश्वर हमारी प्यारी को प्रान दान दे मैं (अंचल पसार कर) वर मांगती हूं (गुलाब नीर छिड़क कर) अरी प्यारी मञ्जरी टुक दृष्टि पात कर ईश्वर सर्व शक्तिमान है तुझे फिर मदन मोहन से मिलावेगा (मदन का नाम सुन कर नेत्र खोलती है)

मञ्जरी—हे सखी कहां हैं प्रान नाथ ?

सखी—(विलाप कर के) हे सखी वह तो राजाज्ञा से कारागृह में गए ॥

मञ्जरी—अरे क्या प्रान नाथ मेरे कारण बांधे गए और मैं

जीती हूं हा प्रान नाथ (मूर्छित होती है)

सखी—हे ईश्वर अब मैं इसको रक्षा कर अब मैं क्या करूं देखो इसके मुख का रंग पीत होगया मस्तक पर स्वेद कन छा गए (गुलाब नीर छिड़क कर) अरी नेत्र तो खोल।

मञ्जरी—(कुछ सुध सम्हाल कर)

कवित्त ।

मेल गरे मृदु बेलिसी बाहन कौनसी चाहन छाहन डोलि हों। कासों सहास बिलास समारखु ही के हुलासन सो हंस बोलिहों। श्रवनन प्याइहों सुधारस कासों वृथा की कथा गठ खोलि हों। प्यारे बिना हों कहा लखिहों सखियां दुखियां अखियां जब खोलि हों॥

हा प्रान नाथ धिक है मुझ को और धिक्कार है मेरे जीवन को जो मेरे सनमुख प्रान नाथ दाँधे गए हा!!! मैं महा मंद भागिनी और पतित पापिनी हूं हे धरा तूं फट क्यों नहीं जाती कि मैं समा जाऊं अरे पृथ्वी भी मेरी पुकार नहीं लगती है पावस के बादल तुहीं एक चपला अगिन बान मार, कि मैं भस्म हो जाऊं अरे तड़िता भी नहीं गिरती जो दुखित कलेवर को भस्म करे अब क्या करूं तो उन्हीं का ध्यान स्मर्ण करूं, अरे

हा ध्यान क्या पत्थर करूं चलूं अब हाला हल पान करूं (गरल कर में लेकर) हे विष—तू शीघ्र ही मेरे कलेवर में प्रवेश हो कि कि मैं अपने प्राण नाथ के कारण प्राणान्त करूं॥

(नैपथ्य में)

हे पुत्री तू धैर्य्य धारण कर तेरा पति १ वर्ष की अवधि में अवश्य मिलेगा॥

(चौंक कर) अरे यहां तो कोई दृष्ट नहीं पड़ता यह ध्वनि कहां से आई॥

(नैपथ्य में)

धीरज धर धीरज धर॥

अरे यह आकाश बानी है (मन में) इस बाणी से प्रगट भया कि एक वर्ष तक निराधार हो रहूंगी मृत्यु भी नहीं है तो अब तो चलूं (उठ कर) अहा दई ऐसी पावस ऋतु में प्राण नाथ बिछुरे हैं॥

सवैया।

बिछुरे बल बीर पिया सजनी तिनि हेत सबै बिसरावनो है। हरिचन्द जू त्यौं सज को अपवादन औरहु सोच बढ़ावनो है। कर को उन

के गुन गान सदा अपने दुख को बिसरावनो है। जिहि भांति से द्योस ये बीतैं सखी तिहि भांति सों बैठि बितावनो है। धिक देह औ गेह सबै सजनी जिहि के बश नेह को टूटनो है। उन प्राण पियारे बिना यह जीवहि राखि कहा सुख लूटनो है। हरिचन्द जू बात ठनी सो ठनी नित के कलिकान ते छूटनो है। तजि उपाय अनेक अरी अब तो हम को बिष घूटनो है॥

अहा देखो बादल पावस ऋतु के कैसे डरावने लगते हैं सोहे प्यारे मदन तुम हम अनाथनी मंद भागिनी को प्रान कर के बचाओ॥

कवित्त।

झुकत २ भूमि २ घूमि २ चले भूमि सों भिरत मानो बल के उमंगये। बार २ गरज सुनावे बरजे न जांय नहीं हैं उदार धार मद के तरंगये। दंत बक पांति ते डरावे बिन कंत मारे अंकुश समीर हू न माने कारे रंगये। क-

लिये सहाय आए पाछिन में मदन मोहन होहि
ना सघन मदन मतंगये ॥

कवित्त ।

अरे—जोबन प्रवेश में बिदेश मद सूदन जी
निपट अंध्यारी कारी सावन की यामिनी । कूक
टक रटत पपिहरा पिक नील कंठ हियो चम-
कत दमकत ज्यो दामिनी । सूनी सेज मन्दिर
में सुन्दरि बिसूरै बैठि प्रीतम सुजान बिन कैसे
जिये भामिनी । नैन भरि ढरै मुख हेर २ करै
उझरि २ परै काम भरी खरी कामिनी ॥

हा प्राण नाथ अब मैं किस की हो के रहूं मुझे तो
कोई नहो दृष्टि पड़ता जो मेरो इस असह्य विपत्ति में स-
हायक हो हे आर्यपुत्र हे प्राणनाथ तुम कहां हो, क्या हुआ
तुम पर कौन आपत्ति ने आसन जमाया, हा ! इस तुम्हारी
विपत्ति की उतपत्ति की मैंहीं मूल कारण हुई हा प्रान
नाथ ! जिनने कभी स्वप्न में भी क्लेश का दर्शन नही किया
सो आज इस मंद भागिन के हेतु बन्धन में बांधे गये जो
सब पर आज्ञा करते थे सो मुझ अभागिनी के हेतु आज्ञा
किये गये (रूदन करती है) हे नाथ ! अब तो नही सही

आती (सखियों से) हे सहेलियो ! मैं तो अब तब हो रही हूं अब मुझे मरना ही भला है कि अपने प्राण प्यारे का लोप न देखूं और शरीरान्त करूं धिक्कार है। हे प्राण नाथ ! तेरी सलोनी मूरत मेरे हृदय से विस्मरण नहीं होती है नाथ ! अब तो आओ मुझे विरह सागर में डूबने से बचाओ, अरे हे दई मैं क्यों न जनते ही नष्ट हो गई कि इस दुसह विपत्ति को न देखती न सहती, अरे अब देखो आकाश बाणी भी हुई थी कि तेरा वर तुझे अवश्य मिलैगा पर आज पर्यन्त न मिला (चपला से) हे चपले ! मैं तो अब विदा होती हूं परन्तु तू मेरे प्राणनाथ से कहियो कि तुम्हारी प्यारी मंजरी इस लोक से सिधारी और जो कुछ अपराध हम दासी की ओर से हुआ हो सो क्षमा करेंगे और मैं सपथ कर करती हूं कि दूसरे जन्म उनकी दासी होऊंगी; मुझे तो पूर्ण आशा है कि वह क्षमा करेंगे अब मैं विदा होती हूं, चलूं कैसे मरूं (सोच कर) अच्छा फांसी देकर मरूं अरे यहां फांसी भी तो नहीं है चलूं अपनी साड़ी फाड़ूं (फाड़ती है) कड़ी में फांसी बांध कर लो सखी अब मैं प्राण प्यारे के विरह सागर से मुक्त होती हूं मेरी ओर से फिर भी प्राण प्यारे को बारम्बार हाथ कर जोड़ कर प्रणाम कहियो (फांसी के समीप जाकर कुछ विलम्ब करती है) अरी मैं क्या करती हूं मुझे तो आशा है कि प्राण नाथ ! मि-

लेंगी पर न जाने कब मिलेंगे, इस से अब नहीं सही जाती अहा प्राण नाथ ! ! !

तुम कहां हो देखो जिस कारागृह में तुम होगी उस कारागृह के रक्षक तुम्हें क्लेश देते होंगे हाय में क्या कहती हूं मैं ही तो इस विपत्ति की उत्पति कर्ता हुई हूं हे नाथ! अब तो मिलाप होना दुष्कर है अब तुम से ईश्वर के यहां भेंट होगी लो जाती हूं ॥

(गले में फांसी डालकर चाहती है कि लटके कि सखियां दौड़ कर पकड़ लेती हैं)

(जवनिका गिरती है)

(इति पंचमांकः)

अथ षष्टमांकः ।

(स्थान कारग्रह)

(मदन कारागृह में मंजरी का मन में स्मर्ण कर रहे हैं)

(जवनिका उठती है)

मदन—हा ! ! ! प्राण प्यारी ! मंजरी मुझे तेरी सलोनी सूरत नहीं विस्मर्ण होती हा. प्यारी तू मेरे भाग्य मूर्छित

हो गई थी अब मैं नहीं जानता कि तू सजीव है या मृतक है हा प्यारी तेरी कटाक्ष चितवन कदापि नहीं भूलती है हे प्यारी हा तेरी क्या दशा हुई होगी, मुझे यह ज्ञात न था कि मेरे कारण तुझे यह शोकावस्था उपस्थित होगी नहीं तो मैं कदापि न आता हा प्यारी तेरे दीर्घ कटाक्ष खंजन मद गंजन से नेत्र अश्रुपात भरे हुये मुझे अब तक नहीं विस्मरण होते मैंने चलती बार उस के नेत्र अवलोके थे और अपराध क्षमा कराने हेतु विनय की थी तब उस ने आंसू भर दिये थे ॥

सवैया।

साहस के रिस के रस के मिस मांगी विदेश विदा मृदु बान सों ॥ सो सुन बाल गई मुरझाय दही वर बेल ज्यो धारि दवान सों ॥ नैन गरो हियरो भर आयो पै बोल न आयो कछु वा सुजान सों ॥ सालत है उर माझ गड़ी वे बड़ी अखियां उमड़ी असुवान सों ॥

पर हे प्यारी मञ्जरी मुझे पूर्ण विश्वास है कि तू मेरे से अधिक शोकाकुल होगी ! हे ! ! ! सर्व शक्तिमान तू शीघ्र कृपा कर मैं प्यारी मंजरी को देख कर तृषित नेत्रों को तृप्त करूं ।

सिपाही—अरे मूर्ख जब अच्छा लगा था तब हमारी राजपुत्री के भवन में निश्शंक प्रवेश किया था तब तुझे कुछ सुध न थी कि मैं किस अवस्थामें प्राप्त हूंगा अरे क्या तुझे यह स्मर्ण नहीं था कि राजा मोहमर्दन बड़ा वीर रणधीर है उस के मारे सर्व नरेश चहुं ओर के कांपतेमान हैं अब देखो यथा किस अवस्था को पहुंचते हो अब पुकारो उसी मञ्जरी को जो आवे और तुम को इस क्लेश से विमुक्त करे तब हम को भासित होवे कि तुम पर वह मोहित है ॥

अरे उस का तो स्वयंवर रचा जाता है ॥

राजपुत्र—(मन में) अरे क्या २ ऐसा क्या, मंजरी का स्वयंवर होगा ! क्या राज दुलारी दूसरे पुरुष को व्याही जावेगी नहीं कदापि नहीं यह सब मिथ्या भाषण कर रहे हैं पर पूंछ तो (पूछता है) (प्रगट)

हे भय्या सिपाही कब होगा ?

सिपाही—तुझे क्या प्रयोजन है तू तो बुलायाही न जायगा कोलाहल सुन लेगा ॥

राजपुत्र—अच्छा भाई मत कहो (मन में) हे ईश्वर तू बड़ा बलवान है कि तेरी महिमा को कोई नहीं पहुंचता देख कल पर्य्यंत मैं राज कुमारी के साथ विहार करता रहा आज इस कारागृह में हूं वह बहु-

चो—दो कौड़ी के आदमी मुझ से टेढ़ी आंख कर के सीधे बोलते भी नहीं हा दई (रुदन करता है) हे ईश्वर तू ने मेरे कर्म में क्या लिखा था पर अब भी तेरी माया बड़ी प्रबल है चाहे सो कर, मैं उद्यत हूं पर आशावान हूं कि मंजरी को एक बार दिखा दे ॥

सिपाही—भाई यह भी एक बड़े प्रतापी का पुत्र है इसको क्रोध मत दो (राज कुमार से) हे राज पुत्र कल होगा हम सब तुझ को राज दुलारी का स्वयम्बर दिखा देंगे ॥

राजपुत्र—(मन में) अब क्या उसको दूसरे वर के साथ देखूंगा पर परीक्षा तो करूंगा ॥

(प्रगट) अच्छा भाई तुम्हारी जै हो ! ! !

(जवनिका पतन)

(स्थान राज सभा राजा मंत्री सहित सुशोभित हैं)

(जवनिका उठती है)

राजा—(मंत्री से) हे मंत्री मंजरी के दिन पर दिन युवा अवस्था को प्राप्त होती जाती है इसके स्वयंबर का विचार करना अत्यन्त आवश्यक है सो अब तुम जाकर ढंढोरा दो और देश विदेश को पत्र भेजो कि मं-

मरी का स्वयम्बर माघ शुक्ल चतुर्दशी को नियत हुआ है ॥

मंत्री—जो आज्ञा ॥

राजा—और हे मंत्री कालिकाप्रसाद मुनशी को बुलाओ ॥

मंत्री—(चोबदार से) हे चोबदार मुन्शी जी को ले आ ॥

(मुंशी का चोबदार सहित प्रवेश)

मुंशीजी—(सिंहासन चूम कर) जनाब आदाब अर्ज ब-न्दह हस्बुल इरशाद हाजिर है ॥

राजा—अच्छा मुंशी जी राज कुमारी का स्वयम्बर माघ शुक्ल चतुर्दशी को नियत हुआ है सो आप सब छोटे बड़े राजा, रईस बाबुओं को मेरी ओर से निवेदन के उपरान्त लिख दो कि कृपा कर के नियत दिन पर पधारें ॥

मुंशीजी—जी हुजूर ताबेदार को बसरोचश्म कबूल वो मं-जूर है मगर ताबेदार इस अमर से वाकिफ नहीं है कि खत महाराज की जात खास को लिखे जावेंगे या सब लोगों को ॥

राजा—मुंशी जी आप तो वृद्धावस्था को प्राप्त हुए परन्तु अब भी सुध न आई कि स्वयम्बर भी अपने वर्ण में होता है वह तो राज कन्या की प्रसन्नता पर है ॥

मुंशीजी—बहुत बिहतर तो बन्दह रुखसत होता है ॥

राजा—(मन में) देखो कायस्थ लोग कैसे बुद्धिमान होते हैं हिन्दुस्तान के कायस्थ लोग देखो कैसे २ उच्च पद पाये हुए हैं (प्रगट) हे मंत्री तुम भी जाओ स्वयम्बर का दिन अति निकट है सब सामग्री तय्यार करो ॥

मंत्री—जो आज्ञा ॥

[जाता है]

(जवनिका पतन)

(जवनिका उठती है)

(स्थान मंजरी का मन्दिर)

(मंजरी शोकाकुल बैठी है चपला औ मोहनी खड़ी है)

मोहनी—हे राज पुत्री तू वृथा अपने कलेवर को क्षीण केती है तेरे मुखारबिन्द का रंग पीत हो गया और दिन प्रति दिन बला क्षीण होती जाती मुझे विदित होता है कि कुछ दिवस में तू प्राण तो न त्याग देगी और राजा की आज्ञा है कि मंजरी को प्रसन्न रक्खो सो हे सखी चल चौपर खेलें ॥

मंजरी—हे सहेली मेरा मन कदापि न लगेगा पर तेरे कहने को उलङ्घन न करूंगी ॥

[सब चौपर बिछा कर खेलती हैं]

सवैया।

बालम के बिछुरे व्रज बाल को व्याकुलता बिरहा दुख दानते। चौपर आन रची नृप शंभु सहेलिन माह बिनी सुख दानते। तूं जुग फूटे न मेरी भटू यह काहू कह्यो सखियां सुखियांनते। कंज से पान से पांसे गिरे अंसुयां गिरे खंजन सी अखियांनते॥

चपला—हे प्यारी तुझे क्या हो गया जो तू ने पाँसे पटक कर अपनी खंजन मद गंजन सी अखियांन ते मोती से अश्रुपात डार दिए॥

मंजरी—सखी प्रीतम प्यारे मुझ से बिछुरे हैं अरी हा सखी जो प्राण नाथ मेरे नैनन में सदा बसते थे सो अब तेरे मुखारबिन्द से उनकी कथा सुनती हूं॥

सवैया।

जाथल कीन्हे बिहार अनेकन ताथल बैठ अब कांकरी चुन्यो करें। जा रसना से करी बहु बातन ता रसना से चरित्र गुन्यो करें।

आलम जौन से मन्दिर में करी केलि तहां अब सीस धुन्यो करें। नैनन में जे सदा रहते तिनकी अब कान कहानी सुन्यो करें ॥

[नैपथ्य में बड़ा कोलाहल होता है]

मंजरी—(चौंक कर) अरे अब क्या आपत्ति आई (सखी से), हे सखी देख तो ॥

सखी—देखूं क्या मैने आप के भय से कुछ समाचार नहीं कहा था परन्तु अब जो नहीं भाषण करती तो अत्यन्त क्लेश की बात है ॥

मंजरी—(कान लगा कर) हे सखी कुशल तो है तू कह तुझे मेरी सौंह है ॥

मोहनी—हे प्यारी राजा ने तेरा स्वयंबर ठाना है आ प्रातः काल होगा सो सर्व देशान्तरों के राज पुत्र एकत्र होंगे उसी का कोलाहल हो रहा है ॥

मंजरी—हा !!! ईश्वर अब यह क्लेश पर क्लेश मैं तो मदन मोहन को जयमाल डाल चुकी अब किस्को स्वयम्बर में जयमाल डालूंगी जो ईश्वर को करना था सो हुआ अब क्या मिले तो वही वही वही नहीं तो नहीं २ पर हे सखी मुझे पूर्ण आशा है कि उस समय राज कुमार भी स्वयम्बर में सुशोभित होंगे तब मैं उसी

समय प्राण प्यारे के रूप अनूप छवि को अवलोकन कर अपने को कृतार्थ करूंगी ॥ मुझे विदित होता है कि अब देव वाणी सत्य ही सिद्ध होगी ॥

सखी—हे प्यारी अब तो तुम दूसरे की भार्य्या होगी और आज पर्य्यंत राज पुत्री हो प्रातः काल से राज रानी विदित होगी ॥

मंजरी—हे सखी अब क्या अब तो मैं उनकी हो चुकी ॥

सखी—हे प्यारी यदि मदन मोहन न आए तो ?

मंजरी—उसी समय प्रान त्याग दूंगी पर मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रान नाथ अवश्य मिलेंगे ॥

मोहनी—पर हे प्यारी अटा पर से देख तो कोई राज पुत्र तेरे दृष्टि में जचता है अथवा नहीं ?

मंजरी—अब तो एक के रंग रंगी सो रंगीं अब क्या अन्य पुरुष को अवलोकन करूं ॥

जबते दरसे मन मोहन जू तबते अखियां ये लगीं सो लगी । कुल कान गई सखी वाही घरी जब प्रेम से के फंद पगी सो पगी ॥ कहैं ठाकुर नेह के नेजन की उरमें अनी आन खगी सो खगी । तुम गावरे नावरे कोऊ धरो हम सांवरे रंग रंगी सो रंगी ॥

मोहनी—हे सखी तो अब उठ महारानी की आज्ञा है कि सोलह शृङ्गार बारहो आभूषण धारण करा के मंजरी को स्वयम्बर में उपस्थित करो ॥

मंजरी—अच्छा सखी (मन में प्रसन्न हो कर) तो अब चलूं प्रान नाथ का दर्शन करूंगी ॥

(जवनिका पतन)

(जवनिका उठती है)

(स्थान राजसभा)

राजा—हे मंत्री कह किस२ देश के राजा स्वयम्बर में उपस्थित हैं ॥

मंत्री—हे महाराज अनेकन नगरों के राज पुत्र एकत्र हैं पर मैंने एक बड़े विस्मय की बात सुनी है, यदि आज्ञा हो तो प्रगट करूं ॥

राजा—(घबड़ा कर) सो क्या, कहो मैं सुनने को तत्पर हूं ।

मंत्री—हे महाराज मथुरा के राजा का पुत्र (मदन मोहन) एक वर्ष व्यतीत हुए देशाटन करता हुआ इधर आ निकला था सो किसी कारण आप ने कारागृह में कर दिया था और अत्यन्त कष्ट दिए थे ॥

राजा—सो फिर ॥

मंत्री—महाराज वह राजा बड़ा पराक्रमी है और उस के

निकट चतुरंगिनी सेना है सो मैने सुना है कि वह आता है और कहता है कि मै स्वयम्बर में से राजपुत्री को अपने भुजों के बल से ले आऊंगा देखूं राजा मोह मर्दन क्या करता है । सो वह अति ही निकट है अब जो आज्ञा हो करने को तत्पर हूं ॥

राजा—हे मंत्री अब क्या करना योग्य है ?

मंत्री—हे महाराज वह बड़ा पराक्रमी है यदि अपराध क्षमा हो तो निवेदन करूं ॥

राजा—हे मंत्री तू कह मैने तेरा अपराध क्षमा किया ॥

मंत्री—तो हे राजा उचित तो यह है कि राज पुत्र को कारागृह से विमुक्त करके सुन्दर वस्त्र आभूषण धारण करा के अपनी पुत्री मञ्जरी सहित राजा से मिलो ।

राजा—धिक धिक मूर्ख अरे सुन मेरा नाम मोह मर्दन है, क्या मै इतने राज पुत्रों के आगे अपनी टे छोड़ूंगा ॥

मन्त्री—(मन में) टेंगे और टेते न बनेगा (प्रगट) हे राजा तू युद्ध में पराजय करने का प्रयत्न करो ॥

राजा—(चोबदार से) चोबदार सेना पति को बुलाओ ?

चोबदार जो आज्ञा (जाता है)

(चोबदार सहित सेना पति का प्रवेश)

सेनापति—महाराजाधिराज की जै हो ॥

राजा—हे सेना पति आए, देखो स्वयम्बर में अवश्य युद्ध होगा सो तुम सेना सहित सावधान हो ॥

सेनापति—(मन में) मेरे पास इतनी सेना नहीं है कि राजा मथुरा पुरी का जो चढ़ कर आया है सामना कर सकूं पर इससे क्या राजाज्ञा मानना आवश्यक है (प्रगट) जो आज्ञा महाराज की ॥

(नैपथ्य में युद्ध के बाजन बजते हैं)

राजा—(चौंक कर) चोबदार देखो तो स्वयम्बर में काहे का घोर शब्द होता है ?

चोबदार—(पगड़ी पटक कर) महाराज प्रबल प्रताप की जय हो राजा बसदेव सिंह की सेना टिड्डी के सदृश उमड़ी चली आती है पद चरों के समूह गजों के समूह के समूह अश्वारूढ़ों की तो गिन्ती भी नहीं है जय जय ध्वनि करते स्वयंबर में उपस्थित होने चाहते हैं हे महाराज शीघ्र प्रबन्ध करो नहीं तो राजा की सेना पहुच जायगी तो बड़ा अनर्थ होगा ॥

राजा—(चोबदार से) चोबदार तू सेना पति को साव-धान कर जब तक मैं भी शस्त्र सहित स्वयम्बर में आता हूं (जाता है)

(अवनिका पतन)

(अवनिका उठती है)

(स्थान स्वयंबर राज पुत्र एकत्र हैं)

मञ्जरी अपने हस्त कमलों में जयमाल लिये मन्द गति से फिरती है

मंजरी—(मन में) हा देखो इतने देशों के राज पुत्र स्वयम्बर में उपस्थित हैं पर मदन के रूप अनूप छवि को कोई नहीं पाता है (चारों ओर देख कर) हे प्राण नाथ ! तुम कहाँ हो क्यों छिपे हो. प्रगट क्यों नहीं होते अरे हा, वह नहीं दृष्ट पड़ते (इधर उधर देखकर)

(नेपथ्य में)

(मारो मारो पकड़ो पकड़ो कहां कहा है वह राजा जिस ने हमारे राजकुंवर को कारागृह में बंद किया है)

मंजरी—(विह्वल हो कर) अरे यह क्या विपत्ति फिर पड़ी देखूं तो क्या है (देखती है) अरे ठीक है राजा की सेना आ गई तो भागूं अपने मन्दिर के अटा से अवलोकन करूंगी (स्वयंबर से तुरन्त जाती है)

(सेना स्वयंबर को घेरती है)

राजावासदेव—पकड़ो, मारो २ देखो रामसिंह जवाहर

सिंह इत्यादि जाने न पावे सब मारो पकड़ो राजकुवर को ढूढ़ो ॥

(जविनका पतन)

(जविनका उठती है)

(स्थान मोहमर्दन की सभा)

(राजा शोचित बैठा है)

मंत्री—हे राजा देखो सेना आगई ॥

कवित्त।

झलकत आवे झुंड झीलम झलान झप्यो
तमकत आवे तेगवाही बोसिलाही है। कहैं
पद्माकरत्यों दुंदभी धुकारें सुन अकबक बोलें
गनीम वो गुनाही है। माधव को लाल कालहू
ने बिकराल दल साज धायो ये दई दई धौं कहा
चाही है॥ कौन को कलेजधौं करेया भयो काल
मरु काये थो परैया भयो गजब दुलाही है॥

राजा—हे मंत्री अब मैं उस से युद्ध में नहीं पारपा सक्ता और स्वयंबर में बड़ा अनर्थ हुआ मेरी बहुत सेना नष्ट हुई पर तो भी उसे पराजय न कर सका और अब भी

भंग हुआ इस से तू जाकर राजा से हमारी ओर से प्रार्थना के उपरांत यह कहियो कि अपनी सेना को सन्हाओ मैं राजकन्या राजपुत्र सहित अर्पण करता हूं ॥

मंत्री—जो आज्ञा (जाता है)

[जविनका पतन]

[जविनका उठती है]

[स्थान राजा बसुदेव सिंह की सभा]

[द्वारपाल का प्रवेश]

द्वारपाल—महाराज की जै हो, राजा मोह मर्दन का मंत्री कुछ समाचार लेकर आया है जो आज्ञा ?

राजा—सादर ले आवो

[मंत्री का प्रवेश]

मंत्री—(सिंहासन को चूम कर) महाराज मैं मंत्री राजा मोह मर्दन हूं ॥

राजा—हे मंत्री तुम्हारे राजा ने हमारे पुत्र को अपने भुज बल से कारागृह में रक्खा हैं भला ऐसा चाहिये दैव गत बालकों से कुछ अनुचित कर्म हो गया हो तो माता, पिता गुरु स्याने क्षमा करते हैं ऐसा कहा भी है ॥

जो लड़का कुछ अनुचित करहीं ।
गुरु पितु मात मोद मन भरहीं ॥ (रामायण)

मंत्री—हे राजाधिराज यह अपराध हमारे राजा से अन-जान में हुआ सो आप क्षमा करें मैं इसी हेतु आया हूं ॥

राजा—हां मैं जानता हूं कि तुम्हारे राजा के कदापि नहीं जाना पर अब हमारा नैनो का तारा कहां है? ॥

मंत्री—हे राजन् हमारे राजा राजकन्या दान की सामग्री एकत्र कर रहे हैं और राजकंवर तथा राजकुमारी सहित महाराज को भेंट करेंगे ॥

राजा—हे मंत्री मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ तुम जाकर यह शुभ समाचार अपने राजा से कहो ॥

मंत्री—जो आज्ञा (जाता है)

[राजा मोह मर्दन मंजरी सहित राजकुंमार को लेकर भेंट करते हैं और राजा हर्ष पूर्वक विदा होकर अपने नगर को आते हैं]

[जविनका पतन]

[इति सप्तमाङ्कः]

[अथ अष्टमांकः]

[जवनिका उठती है]

[स्थान मदन मोहन का मंदिर राजा सिंहासन पर सुशोभित हैं]

[चोबदार का प्रवेश]

चोबदार—महाराज की जय हो ! ! ! एक बुड्डा स्त्री एक नव यौवना अत्यन्त स्वरूप कन्या के सहित द्वार पर दर्शनार्थ खड़ी है जो आज्ञा ॥

राजा—आने दो ॥

[चोबदार सहित कन्या का प्रवेश.]

कन्या—प्रणाम करती है ॥

राजा—हे कन्ये तुम कौन हो और किस हेतु तुम्हारा आगमन हुआ (मन में) अहा धन्य है क्या संसार में अपसरा की उत्पत्ति संभव है धन्य है इस का जन्म और इस के माता पिता को और अनेकान धन्य है जिस की यह भार्य्या है ॥

कवित्त ।

धन्य वह गांव बसो जिह ठांव वो डोलो लली सो गलीधन है ॥ धन है कर से परसे जो तुम्हे दरसे नित तेऊ बड़े धन है ॥ धन हैं वे तात वो मात जनी जब देह धरी सो घड़ी धन है ॥ धन्य धना धन तेरे हितु जिन की तुम धना धन सो धनीहै ॥

क्या कहूँ यह तो मंजरी से कहीं अपूर्व है (प्रगट) किस कारण तुम भ्रमण करती फिरती हो और अपने को मल शरीर को क्लेश देती हों ? ॥

कन्या—हे महाराज हमारी उत्पत्ति अपसरा कुल से है हमारी माता एक दिन अच्छोद सरोवर को स्नानार्थ गई थी वहाँ किसी देवता से संसर्ग हो गया तो गर्भ स्तंभन हुआ तब मैं जन्मी ॥

राजा—फिर क्या हुआ ॥

कन्या—तब मुझे सुन्दर देख कर देवता मुझे स्वर्ग को उड़ा ले गए पर मेरा चित्त वहाँ न लगा इस हेतु उन से छिप कर आप के निकट इस आशा से आई हूं कि महाराज वीर पुरुष हैं मेरे प्रान बचावेंगे—

राजा—(मन में) ऐसी स्त्री को अपने गृह में कदापि रखना योग्य नहीं है (प्रकट) हे अपसरा मैं तुम को नहीं बचा सका मेरे में इतनी सामर्थ नहीं है कि देवतों से लड़ने सकूं इस से आप..................

अपसरा—हे राजा यदि आप मुझे अङ्गीकार नहीं करते तो इतना तो कीजिए कि मैं नाद विद्या में अति निपुण हूं सो क्षण मात्र श्रवन कीजिए फिर मैं विदा हूंगी पर मैं नहीं जानती कि इस दासी से कौन अपराध हुआ कि महाराज रुष्ट हो गए ॥

राजा – अहै शोभा और सुगन्ध (मन में) देखूं कैसी अलाप जारी करती है (प्रगट) अच्छा तुम गावो मैं आनन्द पूर्वक श्रवन करता हूं—

(अपसरा बीणा बजा कर गाती है)

(गज़ल)

(ताल मूल तिताला)

ऐ माह आलम सोज़ मन अज मन् चिरा रंजीदई। ईशम अशब अफरोज़ मन अज मन चिरा रंजीदई ॥ १ ॥ एक शब तुरा महमा कुनम् ता जानो दिल कुरबा कुनम् । जाये तो दर चश्मा कुनम् अज़ मन चिरा रंजीदई ॥ २ ॥ ऐ जान मन् जानान मन् बर मन् निगह सुलतान मन् । एक शब बया मिहमान मन् अज़ मन् चिरा रंजीदई ॥ ३ ॥ मन् आशिके ज़ारे तो अम् अज़ आवफा दारे तो अम् । ताज़िन्द अम् यारे तो अम् अजमन चिरा रंजीदई ॥४॥ मन् अशिके दिवाने अम् अन्दर जहां अफसाने अम् । तुशम अवो मन परमान अम् अज मन्

चिरा रंजीदई ॥ ५ ॥ रंजीदई रंजीदई अज मन गुनह चे दीदई। दायम गुनह बख्शीदई अज मन चिरा रंजीदई ॥ ६ ॥ बिन गरज इशकात चूं मुदेश सर गश्त वो मजनू शुदम्। चूं लाल दिल पुरखूं शुदम् अजमन चिरा रंजीदई ॥७॥ गर मन बगीरम दर गमत खूनम फिदत दर गरदनत। फरदा बा गीरम दामनत अज मन चिरा रंजीदई ॥ ८ ॥ ऐ शरो खुश बा लाय मन ऐ दिल बरे रानाय मन। लाले लबत हल्वा ए मन अजमन चिरा रंजीदई ॥ ९ ॥ मन आशिक ए दिल ख्वाह तो अब रूप चुं तो माहरा। मन यार ने को ख्वाह तो अजमन चिरा रंजीदई ॥ १० ॥ ॥ (शेख़ शादी)

राजा—(मन में) अहा कितना बढ़ कर गाती है तो मैं भी इसके दो चार कबित्त बनाऊं (प्रगट) हे अपसरा तुम बहुत अच्छा गाती हो कि मेरा मन विह्वल हो गया अब तुम्हारे दो चार कबित्त जो मैंने बनाये हैं उन्हे सुनिए ॥

अपसरा—भला आप कहैं मैं सुनती हूं ॥ (सुनती है)

[राजा उसी अपसरा के ऊपर]

नवल किशोरी शुभ उदित ठयोरी मुख क्रान्त छबि भोरी मन हरण नवेली है। रूपरस नयोरी बोरी अंगहूं अनंग रंग सुन्दर छटासी भौंह अधिक नुकीली है। दमन दुति देखि दाड़िम दरार खात सुन्दर कपोलन तिल आभा मनि नीली है। भनै जगेश्वर हिय देखत लुभाय लेत ठवनि गयन्द कटि अधिक लचीली है ॥ १ ॥

कटि बल खाय जात धरत मही में पांव सुन्दर मिसकारी प्यारी जादू सो करत है ॥ जाही ओर भृगुटी उमंगता से हेर ताह मानो भुजंग डस्यो धरनी बिच परत है। यौवन है टसिरी जिमि जादू की रसरी हिय जामें गयो फँसरी तामे धीर ना धरत है। भनै जगेश्वर नवेली अलबेली जत्र सुन्दर सुधार बाढ़ कज्जल सी धरत है ॥

सुन्दर कपोलन में मखमल से श्रौल तौल नासिका सुदृष्ट कीर देखहु लजानो है। कण्ठ को कपोतहू देखतही ससक जात चञ्चल चख हरे मीन खञ्जन झमकानो है। जंघन झपाक झांक झमक झमाक ऐन कदलि सुखन्द फन्द हिय हुलसानो है। भनै जगेश्वर नव किङ्किनी जड़ावदार नवल किशोर को जोवन उरझानो है॥

वय है थोरी अति नवल किशोरी रस योवन की बोरी मार सन्दल झकोर है॥ कोमल कमल सी गुलावन के दल सी सु किञ्चुकी उरोजन ज़र बोर है। कलस कमाऊ मानों कमठ लजाऊ सो अधिक सजाऊ अति सुन्दर कुच तोर है। भनै जगेश्वर पिक बैनी गज गमनी बाल चित्त के चुराउन को तेरी दृग कोर है॥

हे प्रिये तुम ने सुना।

अपसरा—हां महाराज पर मैं फिर भी आसावती हूं कि महाराज मेरी मनसा पूर्ण करें॥

राजा—(मन में) यदि मैं इस स्त्री को मन्दिर में रहने

की आज्ञा दू तो मंजरी अति ही रुष्ट हो जायगी इस्से (प्रगट) हे प्रिये तुम अपसरा हो तुम को मृत्यु लोक में किसी की सामर्थ नहीं है कि रख सके ॥

अपसरा—तो हे नाथ आप अपने हस्त कमल से कुछ पारितोषक दें ॥

राजा—(अपने हस्त कमल की मुंदरी उतार के देता है) ले अब तो प्रसन्न हुई न ॥

अपसरा—(मन में) अहा अब तो महाराज की मुंदरी पाई अब चलूं (प्रगट) हे महाराज मैं जाती हूं (जाती है)

(नेपथ्य में)

(मैं आई मैं आई मैं आई)

राजा—(चौंक कर) (मन में) अब कौन साहबा तशरीफ़ लाईं अरे वाह वा वाह वा यह तो वही बदमास विदूषक है (प्रगट) अरी तू कौन मुकारिया औरत है ॥

विदूषक—जी हां मेरे यहां ऐसी स्त्री बनती हैं जो तुझ सदृश राजा को मोहती है ॥

राजा—अबे कैसा कहता है क्या मैं किसी स्त्री पर आसक्त हुआ हूं जो तू ऐसा कहता है ॥

विदू०—जी नहीं आप आसक्त नहीं हुये तो मुन्दरी किस को दी है ? ॥

राजा—किस्को दो है ? (चोबदार से) चोबदार इस को निकाल दो ॥

विदू०—(मुंह बना कर) चोबदार इस को निकाल दो चोबदार इस्को निकाल दो क्या चोबदार अभी नहीं निकले उन को तो किसी दाई ने निकाला होगा ॥

राजा – मित्र तुम बड़े बुद्धिमान हो कहो क्या है ॥

विदूषक – राजा मै न रहूं तो तुम्हे कोई कौड़ी दाम को न पूछै ॥

राजा – कैसे ॥

विदूष – घबड़ाते हो – देखो तुम्हारी विवाहिता मंजरी रूप पलट कर आई और सुन्दरी ले गई तुम ऐसे उस पर आगक्त हुए कि उस को न पहचाना वाह रे बुद्धिमानी क्या कहूं (देखो तेरी कालपी बावनपुरा उजार) ऐसे ही राज करोगे ॥

राजा – (मन में) अरे ये क्या सत्य है प्यारी मंजरी थी मुझे तो पहिले ही स्पष्ट था कि मंजरी से बढ़ कर कोई स्त्री है हो नहीं हां न हो वही थी (प्रगट) हे सखा तुम मिथ्या भाषण करते हो वह राजरानी कैसे आवेगी ॥

विदूष० – यदि न मानो तो वह मुन्दरी न देख लो जिस पर नाम स्पष्ट है ॥

राजा – यदि न हुई तो ॥

विदूष – तो जो चाहे सो करना ॥

राजा – तो अब जाता हूं (जाता है)

[जविनका पतन]

(इति सप्तमाङ्क)

अथ अष्टमांकः ।

[जविनका उठती है]

[स्थान चित्रसारी]

[मंजरी नींद से चित्रसारी में पर्यंक पर वे-
सुध पड़ी है]

[कवित्त]

सोई हुती पलका पर बाल खुलि अचरा नही जानत कोऊ। ऊंचे उरोजन कञ्चुकी ऊपर लालन के चरचे दृग दोऊ ॥ सो छवि प्रीतम देख छकें कवि तोष कहै उपमा यह होऊ। मानो मढ़े सुलतानी बनात सो साह महीप के दुंदुभी दोऊ ॥

राजा – तो अब कैसे जगाऊं अभी तो देखो क्रोध के कारण इसके मुखारविन्द का रंग पीत हो गया है (सोच कर) इसके रूठ जाने का क्या कारण है हाँ ठीक है इस में ये परीक्षा तो थी कि राजा किसी स्त्री पर मोहित होते हैं या नहीं सो मैंने उस स्त्री को तो उस समय कुछ नहीं कहा पर सुन्दरी ही तो थी और कवित्त कहे थे सो क्या हुआ तो अब चलूं जगाऊं क्योंकि अब प्रातःकाल भी हो गया यदि वह कहेगी तो कुछ बात बना लूंगा, नहीं नहीं पहिले सोचूं फिर जगाऊं (सोचता है) तो कहूंगा क्या, अहा अच्छा सोचा यदि वह क्रोध करेगी तो कह दूंगा कि मैंने तो जान बूझ कर ऐसा किया था तो अब चलूं जगाऊं ॥

[जगाता है]

हे हे मृगाक्षी तरुणी कृशी कृशी कटी विशाली जघना घना घना। कुचौच पीनौ कठिनौ ठनौ ठनौ उत्तिष्ठ कान्ते रजनी जगाम ॥

रानी – (चौंक कर) अरे कौन है (मन में) अरे ये तो राजा हैं तो अब नेक रूठ जाऊं (प्रगट) हे महाराज आप कहां थे वहीं पर जावो जहां रात गंवाई है ॥

[ठुमरी]

[ताल तिताला]

जावो स्याम जहां रैन गवाई ॥ पीक लीक अति नीक लगत है आनन में पियराई ॥ टेक॥ भोर सुहाग भयों अब हमरो बतियां करो न बनाई ॥ श्री रघुराज वाही सौतन के चरण गहौं सिर नाई ॥ जावो स्याम जहां रैन गवाई ॥

राजा – हे प्रिये मै तेरा दास हूं मुझे यह बता कि किस अपराध पर रूठी है ॥

रानी – उसी के यहां जावो जिसे मुन्दरी दी है ॥

राजा – हे प्रिये तुम को दी थी ॥

रानी – क्यों मिथ्या भाषण करते हो ॥

राजा – तेरी सौं प्यारी ॥

रानी – (मन में) राजा ने जान लिया (प्रगट) हे नाथ मैं तुम्हारी प्रीत देखने गई थी अब चलो ॥

[दोनों परस्पर मिलते हैं]

[जविनका पतन]

इति समाप्तः ।